मासिक पत्रिका RAJHIN/2007/21229 वर्ष-01, अंक नं. 04

जयपुर टाइम्स

राजस्थान की रग-रग से निकली बात
जयपुर टाइम्स मैग्जीन के साथ

धराली त्रासदी
प्राकृतिक कहर या मानवीय चूक?

मोदी और शाह को भाए भजनलाल..... 04

मोदी और शाह को भाए भजनलाल राजस्थान हो गया निहाल

पहले वाजपेई का अब नरेंद्र मोदी..... 16

पहले वाजपेई का अब नरेन्द्र मोदी का दिल जीता 'अश्विनी वैष्णव' ने

सुमित गोदारा की अभिनव पहल..... 21

सुमित गोदारा की अभिनव पहल, 26 लाख लोगों ने छोड़ी खाद्य सुरक्षा योजना

राजनीति में दादी से आगे निकली... 25

राजनीति में दादी से आगे निकली दिया कुमारी

पिता के सपनों को साकार कर रहे 29

पिता के सपनों को साकार कर रहे है कड़ी मेहनत

भजनलाल सरकार में VIP कल्चर..... 34

भजनलाल सरकार में वीआईपी कल्चर का त्याग करने वाले पहले मंत्री 'संजय शर्मा'

शर्मा को भागीरथ बनाने में कन्हैयालाल.... 40

भजनलाल को 'भागीरथ' बनाने में कन्हैयालाल का बड़ा योगदान

ओम पूनियां की लोकप्रियता चरम..... 45

किसान और पशुपालकों में ओम पूनियां की लोकप्रियता चरम पर

धराली त्रासदी: प्रकृति से छेड़छाड़ का दर्दनाक 51

धराली त्रासदी: प्रकृति से छेड़छाड़ का दर्दनाक सबक

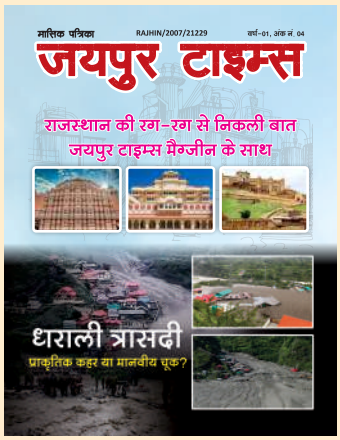

प्रकाशक, मुद्रक
रामेश्वर लाल जाट

संपादक
नीतू चौधरी

उप संपादक
कुमकुम रंगा, रूपचंद गुर्जर, रोहित शर्मा

ग्राफिक डिजाईनर
रजत जाखड़

स्वत्वाधिकारी

केम्ब्रिज मल्टी मीडिया के लिए प्रकाशक, मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा केम्ब्रिज मल्टी मीडिया प्रा.लि. सी-565, सी-4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड़, सीकर रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं सी-565, सी-4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड़, सीकर रोड़ जयपुर से प्रकाशित

संपर्क
संपादक
जयपुर टाइम्स (मासिक)
सी-588, सी-4सी स्कीम,
न्यू लोहा मण्डी रोड़
जयपुर-302013

E-mail
jaipurtimes2007@gmail.com

website
www.jaipurtimes.org

मो. 7014217770

मूल्य:- 100/- प्रति अंक
वार्षिक सदस्यता- 1251 (पोस्टल चार्ज सहित)

सुधी पाठकों के लिए जयपुर टाइम्स का विशेष संदेश

रक्षाबंधन: सामाजिक समरसता, एकता और सुरक्षा का संदेश

रक्षा बंधन को हम अक्सर केवल भाई-बहन के पवित्र प्रेम और स्नेह का त्योहार मानते हैं, लेकिन इसके अर्थ और महत्व इससे कहीं व्यापक हैं। यह केवल राखी के धागे और मिठाई के आदान-प्रदान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति की गहराई में समाई हुई वह परंपरा है, जो सुरक्षा, समरसता और एकता का जीवंत प्रतीक है। इस पर्व की जड़ें न केवल पारिवारिक रिश्तों में, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना में भी गहरी धंसी हुई हैं। इतिहास में कई उदाहरण मिलते हैं, जहां राखी का धागा जाति, धर्म और सीमाओं से परे जाकर भाईचारे और सुरक्षा का वचन बना। मेवाड़ की रानी कर्णावती द्वारा मुगल सम्राट हुमायूं को राखी भेजना और बदले में हुमायूं का उनके राज्य की रक्षा के लिए युद्ध में उतरना इस त्योहार की सार्वभौमिक भावना का प्रमाण है। इसी प्रकार, अनेक सामाजिक प्रसंग बताते हैं कि राखी सिर्फ रक्त-संबंधों का प्रतीक नहीं, बल्कि आत्मीयता और सुरक्षा के सामाजिक अनुबंध का प्रतीक भी है।

आज के समय में जब समाज विभाजन, अविश्वास और अलगाव की चुनौतियों का सामना कर रहा है, रक्षा बंधन का यह व्यापक संदेश और भी प्रासंगिक हो जाता है। यह पर्व हमें यह याद दिलाता है कि हम सभी एक ही सामाजिक परिवार का हिस्सा हैं, और हमें एक-दूसरे की रक्षा, सम्मान और सहायता का संकल्प लेना चाहिए। यह सुरक्षा केवल शारीरिक या भौतिक खतरों से नहीं, बल्कि विचारों, मूल्यों और संवेदनाओं की भी हो सकती है। रक्षा बंधन सामाजिक समरसता का भी प्रतीक है। राखी का धागा किसी जाति, वर्ग या धर्म का मोहताज नहीं। यह हर हाथ पर समान भाव से बंधता है। यह पर्व हमें सिखाता है कि सच्चा संबंध रक्त से नहीं, बल्कि विश्वास, सम्मान और परस्पर सहयोग से बनता है। जब एक बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बांधती है, तो वह दरअसल यह व्रत लेती है कि दोनों जीवन के हर सुख-दु:ख में साथ रहेंगे, और यह संकल्प केवल घर की चारदीवारी में सीमित नहीं, बल्कि समाज में भी अपनाया जा सकता है।

भारत जैसे विविधताओं से भरे देश में एकता बनाए रखने के लिए ऐसे त्योहार विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। रक्षा बंधन हमें यह प्रेरणा देता है कि हम अपने पड़ोसी, सहकर्मी, मित्र और यहां तक कि अजनबी के लिए भी सुरक्षा और सहारा बन सकते हैं। यह एक ऐसा अवसर है, जब हम आपसी मतभेदों को भूलाकर विश्वास का धागा मजबूत कर सकते हैं। इसके साथ ही, रक्षा बंधन सुरक्षा का भी पर्व है। यह सुरक्षा केवल पुरुष द्वारा स्त्री की नहीं, बल्कि स्त्री द्वारा पुरुष की भी हो सकती है। आधुनिक समाज में महिलाएं भी समान रूप से संरक्षक और सहयोगी की भूमिका निभा रही हैं। यह पर्व इस सोच को भी प्रोत्साहित करता है कि सुरक्षा का अधिकार और कर्तव्य दोनों ही लिंग-आधारित नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों पर आधारित हैं। आज की बदलती जीवनशैली में, जहां परिवार दूर-दूर बसते हैं और रिश्तों में समय का निवेश कम हो रहा है, रक्षा बंधन हमें रिश्तों की अहमियत और देखभाल के महत्व की याद दिलाता है। यह केवल एक दिन का उत्सव नहीं, बल्कि सालभर के लिए अपनत्व और सहयोग का संकल्प है। अंतत:, रक्षा बंधन का संदेश यही है कि हम एक-दूसरे के लिए विश्वास, सहयोग और सम्मान का संबंध बनाएं। चाहे वह भाई-बहन का रिश्ता हो, पड़ोसी का, मित्र का या सहकर्मी का—हर जगह यह भावना होनी चाहिए कि हम एक-दूसरे की ढाल हैं। राखी का धागा हमें यह याद दिलाता है कि हमारी असली ताकत हमारी एकता और आपसी सुरक्षा में है।

रक्षा बंधन केवल घर में मिठास घोलने वाला त्योहार नहीं, बल्कि समाज में विश्वास और समरसता का सूत्रपात करने वाला पर्व है। जब हम इसे केवल व्यक्तिगत रिश्तों से ऊपर उठाकर सामाजिक दृष्टि से मनाएंगे, तभी इसका असली उद्देश्य पूरा होगा। आज के समय में, जब दुनिया को शांति, सुरक्षा और एकता की सबसे ज्यादा जरूरत है, तब रक्षा बंधन का यह संदेश एक मार्गदर्शन बन सकता है—हम सब एक हैं, और हम सबकी रक्षा का संकल्प हमारा साझा कर्तव्य है।

-प्रधान संपादक
रामेश्वरलाल जाट

मोदी और शाह को भाए भजनलाल राजस्थान हो गया निहाल

पिछले 19 माह के भजनलाल सरकार के कामकाज से खुश हुई दिल्ली, मोदी और उनके मंत्रिमंडल ने दिल्ली दौरे में भजनलाल की थपथपाई पीठ, राजस्थान के करीब 8 करोड़ लोगों की उम्मीद पर खरा उतर रही डबल इंजन की सरकार

जयपुर। राजस्थान प्रदेश के गठन के बाद अब तक प्रदेश में भाजपा और कांग्रेस इन दोनों दलों की ही सरकार बनी और इन दोनों ही दलों की सरकार में एक से बढ़कर एक मुख्यमंत्री भी बने जिन्होंने अपने काम से पूरे देश में प्रशंसा के पात्र भी बने लेकिन प्रदेश के वर्तमान मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सिर्फ अपने अब तक के छोटे से कार्यकाल में ही अपने कामों, नई जनकल्याणकारी योजनाओं और ऐतिहासिक निर्णय से पूरे देश में लोकप्रियता हासिल की है ऐसी लोकप्रियता इतनी छोटी सी अवधि में अब तक किसी भी मुख्यमंत्री ने हासिल नहीं की इसीलिए पिछले दिनों जब भजनलाल दिल्ली गए तो वहां पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह और केंद्र सरकार के तमाम मंत्रियों ने राजस्थान सरकार के अच्छे कामों और श्रेष्ठ उपलब्धि के लिए भजनलाल को शाबाशी दी क्योंकि भाजपा हाई कमान और केंद्र सरकार से जुड़े सभी बड़े लोग मानते हैं कि राजस्थान जैसे विशाल प्रदेश के शासन की बागडोर संभालना आसान काम नहीं है क्योंकि यहां राजनीतिक, सामाजिक, जातिवाद, क्षेत्रवाद, आर्थिक और भौगोलिक स्थितियां हमेशा से सरकारों के लिए बड़ी चुनौती रही है ऐसे में यहां मुख्यमंत्री की कुर्सी फूलों का नहीं बल्कि कांटों का ताज जैसी ही रही, यह बात अलग है कि कई ऐसे भी मुख्यमंत्री रहे जिन्होंने अपनी राजनीतिक चतुराई से एक से ज्यादा बार प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे, अशोक गहलोत, वसुंधरा राजे, भैरोवसिंह शेखावत जैसे नेतओं ने प्रदेश और देश में लोकप्रियता भी हासिल की, लेकिन भजनलाल शर्मा ने मुख्यमंत्री के कार्यकाल की इस छोटी सी अवधि में ही जो लोकप्रियता हासिल की, ऐसी लोकप्रियता अब तक प्रदेश में किसी भी मुख्यमंत्री ने हासिल नहीं की इसीलिए राजनीतिक गलियारों में भजनलाल शर्मा की लोकप्रियता को सबसे अलग और सबसे विशेष माना जाता है इसका कारण यह है कि भजनलाल को जब मुख्यमंत्री बनाया गया था उस समय उन्हें भी यह मालूम नहीं था कि उन्हें इतने बड़े पद पर बिठाया जाएगा, न मीडिया और ना ही भाजपा के गलियारों में मुख्यमंत्री की रेस में भजन लाल शर्मा का नाम था, अपना पहला चुनाव भजनलाल जरूर जीत गए थे लेकिन भाजपा का दिल्ली दरबार उन्हें इतने बड़े पद के लायक समझेगा यह उम्मीद यहां किसी को भी नहीं थी लेकिन मुख्यमंत्री बनने के पहले दिन से लेकर अब तक सिर्फ 19 महीने के छोटे से सफर में ही पहली बार के विधायक और पहली बार के मुख्यमंत्री भजनलाल ने प्रदेश के सर्वांगीण विकास के लिए जो बड़े-बड़े ऐतिहासिक फैसले और ऐतिहासिक निर्णय लिए उनसे उन्हें जो इज्जत भाजपा के दिल्ली दरबार में मिली ऐसी इज्जत अब तक प्रदेश में किसी भी मुख्यमंत्री को नहीं मिली।

भजनलाल सरकार का भ्रष्टाचार मुक्त शासन सरकार का सबसे बड़ा 'प्लस पॉइंट' रहा

भजनलाल सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि और सबसे बड़ी कामयाबी की बात करें तो उसमें प्रदेश में भ्रष्टाचार मुक्त शासन कायम होने की बात सामने आती है, इसमें कोई संदेह नहीं जब से प्रदेश में भाजपा की सरकार का गठन हुआ है तब से ही प्रदेश में सरकार के किसी मंत्री और भाजपा के किसी जनप्रतिनिधि पर किसी भी तरह का कोई भ्रष्टाचार का छोटा सा मामला भी उजागर नहीं हुआ है, यह अपने आप में भजनलाल सरकार का सबसे बड़ा प्लस पॉइंट माना जा रहा है इसकी वजह यही है कि जिस तरह से केंद्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 'ना खाऊंगा ना खाने दूंगा' की तर्ज पर सरकार का संचालन कर रहे हैं और केंद्र की मोदी सरकार के किसी भी मंत्री पर अब तक भ्रष्टाचार के मामूली एलिगेशन भी नहीं लगे ठीक उसी तरह से प्रदेश की भजनलाल सरकार में भी अब तक भ्रष्टाचार जैसी कोई शिकायतें सामने नहीं आई जिसकी वजह से प्रदेश की जनता में भी सरकार के प्रति विश्वास और मजबूत हुआ है तो दूसरी तरफ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह को भी यकीन हुआ है कि राजस्थान में उनकी सरकार उन्हीं के नियमों और सिद्धांतों के आधार पर काम कर रही है। जानकार लोगों का कहना है कि प्रदेश की भजनलाल सरकार में कई बड़ी-बड़ी हजारों करोड़ों रुपए की जनकल्याणकारी योजनाएं संचालित हुई है लेकिन इन योजनाओं में एक भी गड़बड़ी और भ्रष्टाचार जैसी कोई शिकायत ना तो मीडिया में उजागर हुई और ना ही विपक्षी पार्टियों ने भ्रष्टाचार को लेकर शिकायत की है, केंद्र सरकार और राज्य सरकार की ओर से अनेक योजनाएं संचालित की जा रही है इन योजनाओं में पिछली गहलोत सरकार में व्यापक पैमाने पर भ्रष्टाचार की शिकायतें एंटी करप्शन ब्यूरो और सीबीआई जैसी संस्थाओं तक पहुंची थी कई बड़े-बड़े भ्रष्टाचार के मामले उजागर हुए थे, जल जीवन मिशन में भ्रष्टाचार का मामला अब तक जयपुर से लेकर दिल्ली तक चर्चा में बना हुआ है इस मामले में तत्कालीन जलदाय मंत्री अभी जेल में है उनकी जमानत नहीं हो पा रही है इसलिए पिछली गहलोत सरकार में भ्रष्टाचार के विभिन्न मामलों से राजस्थान सरकार की पूरे देश में एक तरफ जहां छवि धूमिल हुई थी तो दूसरी तरफ राजस्थान की जनता में भी सरकार के प्रति विश्वास कमजोर हुआ था लेकिन वर्तमान में भजनलाल सरकार के अब तक के कार्यकाल को देखकर हर कोई यही कह रहा है कि कहीं ना कहीं भ्रष्टाचार के मामलों पर अंकुश लगाने में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा काफी हद तक सफल हो गए हैं, यही वह बड़ी वजह है जिसकी वजह से नरेंद्र मोदी भजन लाल शर्मा से काफी प्रभावित है।

पारदर्शक तरीके से आयोजित हुई विभिन्न भर्ती परीक्षाएं, एक भी पेपर नहीं हुआ आउट

भजनलाल सरकार में अब तक बड़ी संख्या में सरकारी भर्ती परीक्षाओं का आयोजन हुआ है लेकिन एक भी भर्ती परीक्षा में किसी भी तरह की कोई गड़बड़ी, भ्रष्टाचार और पेपर लीक जैसी शिकायतें सामने नहीं आई सभी भर्ती परीक्षाओं का आयोजन सुव्यवस्थित तरीके से ईमानदारी से हुआ जिसकी वजह से प्रदेश के टैलेंटेड युवाओं को अब महसूस हुआ है कि अब प्रदेश में उनके साथ उस तरह से खिलवाड़ नहीं होगा जैसे पिछली गहलोत सरकार में उनके साथ हुआ था क्योंकि पिछली गहलोत सरकार में करीब दो दर्जन से ज्यादा विभिन्न सरकारी भर्ती परीक्षा में बड़ी संख्या में अनियमितताएं और पेपर लीक की घटनाएं हुई थी इसके बाद गहलोत सरकार की काफी फजियत भी हुई प्रदेश के बेरोजगार युवाओं में और टैलेंटेड युवाओं में गहलोत सरकार विलयन की छवि बन गई थी और कहीं ना कहीं गहलोत सरकार की विदाई में प्रदेश के युवा मतदाताओं का बड़ा रोल रहा था युवा मतदाताओं ने कांग्रेस पार्टी को वोट नहीं किया जिसकी वजह से कांग्रेस को पराजय का सामना करना पड़ा इस बात को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा अच्छी तरह से जानते थे की गहलोत सरकार की विदाई में युवाओं का बड़ा रोल रहा है इसलिए उन्होंने मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठते ही पिछले गहलोत सरकार में विभिन्न भर्ती परीक्षा में हुई गड़बड़ियों की जांच के लिए विशेष जांच दल गठित की और इस जांच करने कई बड़ी गिरफ्तारियां भी की है अभी भी जांच जारी है कहीं और बड़ी गिरफ्तारियां हो सकती है लेकिन इन सब के बीच मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने विभिन्न विभागों में बड़ी संख्या में नई भर्तियां भी खोली है और अनेक भर्ती परीक्षाओं का आयोजन भी करवाया जिसमें सभी परीक्षाएं सुव्यवस्थित तरीके से आयोजित की गई किसी भी परीक्षा केंद्र पर किसी भी तरह की व्यवस्था से आयोजित की गई किसी भी परीक्षा केंद्र पर किसी भी तरह की शिकायत नहीं मिली, एक भी पेपर आउट नहीं हुआ इसलिए इस मामले में एक तरफ प्रदेश की भजनलाल सरकार ने प्रदेश के युवाओं का दिल जीत लिया है तो दूसरी तरफ केंद्र में बैठे भारतीय जनता पार्टी के सभी बड़े नेता भजनलाल सरकार की इस उपलब्धि से काफी प्रभावित है।

लोकदेवता बाबा रामदेव के अनन्य भक्त हैं भजनलाल शर्मा

जानकार लोगों का कहना है कि भजन लाल शर्मा बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति की व्यक्ति हैं पूजा पाठ में शुरू से ही दिलचस्पी रही है परिवार में भी बचपन से ही पूजा पाठ का माहौल मिला है इसलिए गिरिराज धनी के दरबार में उनकी फैमिली के सभी सदस्य नियमित रूप से हाजिरी लगाते रहे हैं और खुद भजनलाल शर्मा भी जब भी मौका मिलता है मुख्यमंत्री बनने के बाद भी गिरिराज जी के मंदिर में परिवार के सदस्यों के साथ हाजिरी लगाते रहे हैं लेकिन जयपुर से काफी दूर जैसलमेर स्थित लोक देवता रामदेवरा के भी भजनलाल शर्मा अनन्य भक्त हैं स्थानीय लोगों का कहना है कि जैसलमेर जिले से भजन लाल शर्मा का बहुत पहले से अटूट रिश्ता रहा है चाहे भाजपा के संगठन से जुड़ा कोई काम हो या फिर संघ की शाखा से जुड़ा कोई काम हो जैसलमेर में उनका पहले भी आना-जाना रहा है और यहां के लोगों से उनके काफी अच्छे रिश्ते रहे हैं अब मुख्यमंत्री बनने के बाद भी जब रामदेवरा पहुंचे तो बड़ी संख्या में वहां पर लोगों ने पैदल यात्रा के दौरान भजनलाल शर्मा का भव्य स्वागत किया।

भजनलाल शर्मा के धार्मिक होने और नियमित रूप से मंदिरों में जाने से ही प्रदेश में हो रही है अच्छी बरसात

जानकार लोगों का कहना है कि प्राचीन काल में जब बरसात नहीं होती थी तो राजा अपनी प्रजा के कल्याण के लिए अनुष्ठान यज्ञ वगैरा करवाता था जिससे इंद्र भगवान प्रसन्न भी हो जाया करते थे इसी तरह से पिछले 2 साल से प्रदेश में लगातार अच्छी बारिश हो रही है इसलिए लोगों का कहना है कि भजन लाल शर्मा काफी धार्मिक प्रवृत्ति के राजनेता हैं नियमित रूप से पूजा पाठ करते हैं और प्रमुख मंदिरों में नियमित रूप से दर्शन करने के लिए जाते हैं तथा प्रदेश की जनता की भलाई के लिए मंदिरों में प्रार्थना भी करते हैं उसी का प्रभाव है कि पिछले साल भी राजस्थान में अच्छी बरसात हुई थी और बीसलपुर बांध सहित अधिकांश छोटे-बड़े बांध पानी से लबालब हो गए थे इस साल भी मानसून सही समय पर आया और लगातार पूरे प्रदेश में बारिश हो रही है इसलिए लोगों का कहना है कि मुख्यमंत्री एक तरीके से राजा ही है और जिस तरह से राजा धार्मिक प्रवृत्ति के हैं और प्रजा की भलाई के लिए वे मंदिरों में जाते हैं तो निश्चित रूप से इंद्रदेव भी राजस्थान पर मेहरबान हैं और राजस्थान में पीने का पानी की जो विकट समस्या हमेशा बनी रहती है पिछले 2 साल से पानी की समस्या से प्रदेश लोगों को ज्यादा जूझना नहीं पड़ा।

भजनलाल शर्मा की वर्किंग पॉवर को देखकर अधिकारी भी हैं काफी चकित

शासन सचिवालय के गलियारों में अक्सर बड़े अधिकारियों में कई बार यह चर्चा भी सुनने को मिली कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा रात को सोते भी हैं या नहीं? क्योंकि जब से उन्होंने प्रदेश के शासन की बागडोर अपने हाथों में ली है उनके नजदीकी लोगों का कहना है कि 24 घंटे में से हर दिन 18 से 20 घंटे भजन लाल शर्मा खुद को सरकारी मीटिंग, सार्वजनिक कार्यक्रम, पार्टी के कार्यक्रम, शिलान्यास उद्घाटन जैसे कार्यक्रमों में ही बिताते आ रहे हैं, मुश्किल से उन्होंने अपने लिए चार-पांच घंटे खाने, पीने, नहाने, पूजा, सोने जैसे कार्यों के लिए निर्धारित किए हुए हैं, अब यह समझ जा सकता है कि उन्होंने अपने को खुद को प्रदेश के लोगों की भलाई और प्रदेश के सर्वांगीण विकास के लिए समर्पित किया हुआ है। अधिकारियों में चर्चा होती है कि जब वे अधिकारियों के साथ मीटिंग करते हैं तो उनके चेहरे पर बिल्कुल भी थकावट नजर नहीं आती और पूरी तरह से फीट नजर आते हैं और उनका सवाल जवाब करने का तरीका भी एक श्रेष्ठ कुशल शासक की तरह होता है लोग कहते हैं कि भजन लाल शर्मा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दैनिक दिनचर्या से काफी प्रभावित हैं भजनलाल शर्मा जब प्रदेश भाजपा कार्यालय में संगठन का काम देखते थे तभी से नरेंद्र मोदी की वर्किंग स्टाइल और उनकी वर्किंग पॉवर से काफी प्रभावित थे इसलिए कहीं ना कहीं भजन लाल शर्मा पीएम नरेंद्र मोदी को फॉलो कर रहे हैं और उन्हीं की तरह उन्होंने प्रदेश की जनता के लोगों की भलाई के लिए खुद को समर्पित किया हुआ है जिसके अच्छे परिणाम भी सामने आए हैं जब पिछले 19 महीना में प्रदेश की भजनलाल सरकार ने कई बड़े फैसले और कई बड़े निर्णय लिए इसी वजह से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्र सरकार के तमाम मंत्रियों ने भजनलाल शर्मा की व्यक्तिगत रूप से भी खूब तारीफ की है और सरकार के कामों को भी खूब सराहा है।

मुख्यमंत्री के निर्देश के बाद प्रदेश भर में क्षतिग्रस्त सरकारी भवनों स्कूलों और आंगनबाड़ी को चिन्हित करने का काम युद्ध स्तर पर शुरू

पिछले दिनों झालावाड़ में हुए स्कूल हादसे को लेकर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा काफी गंभीर दिखे और इस हादसे से उनके कोमल हृदय को भी बहुत कष्ट पहुंचा इसीलिए उन्होंने इस हादसे के बाद हाई लेवल मीटिंग आयोजित की और मीटिंग मुख्यमंत्री काफी भावुक भी दिखे और गुस्से में लाल भी दिखे उन्होंने जिला कलेक्टर, शिक्षा विभाग के अधिकारियों और पीडब्ल्यूडी विभाग के अधिकारियों से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से संवाद के दौरान साफ कह दिया कि प्रदेश में मौजूद उन सभी सरकारी स्कूलों सरकारी बिल्डिंगों, आंगनबाड़ी भवनों को चिन्हित किया जाए जो जर्जर अवस्था में हैं अगर एक भी जर्जर भवन चिन्हित होने से बच गया तो संबंधित अधिकारी की खैर नहीं मुख्यमंत्री के गम तेवर देखकर प्रदेश के सभी जिला कलेक्टर और शिक्षा विभाग के सभी जिला अधिकारी प्रदेश में चर्चा अवस्था में स्थित सरकारी भवनों को चिन्हित करने के काम में जुट गए हैं, जर्जर भवनों के चिन्हित करने के कार्य पर मुख्यमंत्री सचिवालय बारीकी से नजर जमाए हुए हैं, प्रदेश के मुख्य सचिव सुधांशु खुद प्रदेश के सभी जिला कलेक्टर और जिला शिक्षा अधिकारियों के अलावा शिक्षा विभाग के निदेशालय से जर्जर सरकारी बिल्डिंगों के चिन्हित करने के कार्य के प्रक्रिया के बारे में नियमित रूप से फीडबैक ले रहे हैं और और जो फीडबैक मिला है उसके बारे में जिलेवार मुख्यमंत्री कार्यालय को अवगत भी करवाया जा रहा है, सभी चिन्हित जर्जर सरकारी बिल्डिंगों की मरम्मत के लिए पूरे प्रदेश में युद्ध स्तर पर जल्दी से जल्दी शुरू करने के लिए पीडब्ल्यूडी विभाग को पाबंद भी किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की मंत्रिमंडल को नया लुक देने की कोशिश

हर दिन नई, सोच नए विचार और नए संकल्प के साथ दिन की शुरुआत करने वाले मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा अब अपने मंत्रिमंडल को नया लुक देने के प्रयास में जोर-जोर से जुटे हुए हैं, मंत्रिमंडल के सदस्यों के बीच आपस में अच्छा संवाद कायम हो और मंत्री एक दूसरे के साथ अपने विचार शेयर करके अपने विभाग के कामकाज में और सुधार ला सके इसके लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अपनी नई प्लानिंग के तहत महीने में एक बार हर मंत्री के सरकारी आवास पर बारी-बारी से सत्ता और संगठन से जुड़े लोगों के सामूहिक भोज आयोजित किए जाने के अपने इस नये प्रयोग के बारे में मंत्रियों को अवगत करवाया है मंत्रियों ने भी मुख्यमंत्री की इस सोच पर सहमति प्रदान कर दी है, अब अगर हर महीने मंत्रिमंडल के सदस्य एक साथ बैठकर भोजन की टेबल पर आपस में विचार विमर्श करेंगे और अपने-अपने विभाग की उपलब्धियां तथा आगामी योजनाओं के बारे में विचारों का आदान-प्रदान करेंगे तो निश्चित रूप से मंत्रियों के बीच आपस में हुए संवाद से अच्छे परिणाम भी निकाल कर सामने आएंगे बड़ी बात यह है कि मंत्रियों के इस सामूहिक भोज के कार्यक्रम में प्रदेश भाजपा के संगठन से जुड़े बड़े पदाधिकारी को भी बुलाया जाएगा इसलिए सत्ता और संगठन के बीच बेहतर तालमेल स्थापित करने में भी यह सामूहिक भोज का कार्यक्रम एक बड़ा माध्यम बनेगा। पिछले दिनों उपमुख्यमंत्री डॉ प्रेमचंद बेरवा के घर पर सत्ता और संगठन से जुड़े लोगों के सामूहिक भोज का कार्यक्रम आयोजित किया गया था जिसमें मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी सहित राज्य मंत्रिमंडल के सभी सदस्य मौजूद थे इसके अलावा इस सामूहिक भोज के कार्यक्रम में राजस्थान भाजपा के अध्यक्ष मदन राठौड़ और राजस्थान भाजपा के प्रभारी राधा मोहन अग्रवाल के अलावा जयपुर की संसद मंजू शर्मा भी मौजूद थी काफी देर तक भोजन की टेबल पर मंत्रियों के बीच आपस में अच्छे माहौल में

बातचीत हुई कई बार समूह के रूप में भी वहां पर मंत्रियों ने आपस में बातचीत की एक दूसरे के विभागों के कामकाज के बारे में भी चर्चा की और मंत्रियों को कामकाज में क्या-क्या मुश्किलें सामने आ रही है और इन मुश्किलों का कैसे और किस तरह से समाधान किया जाए तथा विभागों के कामकाज में किस तरह से प्रगति लाई जाए इन सबको लेकर मंत्रियों ने संगठन से जुड़े वहां मौजूद लोगों से भी आपस में चर्चा की इसके अलावा मंत्रियों ने आपस में भी अपने विचारों का आदान-प्रदान किया था खुद मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने वहां मौजूद मंत्रियों से अलग-अलग बातचीत की और उनके विभाग के कामकाज के तरीकों और भविष्य की योजनाओं के बारे में भी बातचीत की तथा अपनी ओर से मुख्यमंत्री ने उन्हें आवश्यक दिशा निर्देश भी दिए थे। काफी देर तक यह भोज का कार्यक्रम संपादित हुआ और इस कार्यक्रम में मंत्री काफी खुश और उत्साहित भी नजर आए इसलिए अपनी टीम के सदस्यों के चेहरे खिले हुए देखकर भजन लाल शर्मा ने वहीं पर मंत्रियों को हिदायत दे दी थी कि इस तरह का कार्यक्रम हर महीने आयोजित किया ही जाने चाहिए जिस पर कार्यक्रम में मौजूद मंत्रियों ने भी अपनी सहमति प्रदान कर दी थी इसलिए अब हर महीने इसी तरह के सामूहिक भोज के कार्यक्रम आगे देखे जा सकते हैं जो निश्चित रूप से राजस्थान सरकार के मंत्रिमंडल को नई गति और नई दिशा भी प्रदान कर सकते हैं।

केंद्रीय मंत्रियों से मुलाकात में राजस्थान के लिए बड़ी आर्थिक मदद लेने में सफल रहे भजनलाल

पिछले दिनों मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा 2 दिन के अंतराल में 2 बार दिल्ली गए और इन दोनों बार में उन्होंने नरेंद्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान, केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर, सीआर पाटील और कई अन्य केंद्रीय मंत्रियों से मुलाकात की थी इन मुलाकातों में प्रदेश के कृषि, ऊर्जा, सड़क, शिक्षा, उद्योग, पानी इत्यादि क्षेत्रों में केंद्र सरकार की ओर से संचालित की जा रही कई बड़ी विभिन्न योजनाओं के सफल क्रियान्वयन के लिए राजस्थान का बहुत ही अच्छी तरह से पक्ष रखा जिसकी वजह से वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने भी राजस्थान को जरूरत के मुताबिक आर्थिक सहायता देने का पूरा भरोसा दिलाया था इसके अलावा मंत्री स्तर पर भी राजस्थान के लिए सहयोग हासिल करने में भजनलाल शर्मा कामयाब रहे क्योंकि जिन जिन केंद्रीय मंत्रियों से उन्होंने मुलाकात की उन्हें बाकायदा संबंधित विभाग के कामकाज का फीडबैक दिया और यह समझाने का प्रयास किया कि केंद्र की ओर से जारी होने वाला एक-एक पैसा पब्लिक पर ही खर्च होगा, एक पैसे कभी दुरुपयोग नहीं होगा उन्होंने बाकायदा हर योजना के बारे में कैसे और किस तरह से क्रियान्वयन किया जा रहा है किस तरह से योजनाओं की क्रियान्वयन की मॉनिटरिंग की जा रही है इन सब के बारे में तथ्यात्मक तरीके से जानकारी देकर प्रत्येक केंद्रीय मंत्री का उन्होंने भरोसा हासिल किया और राजस्थान के हर क्षेत्र में डेवलप के लिए उन्होंने जिस भी मंत्री से जैसी भी मदद मांगी वैसे मदद देने के लिए केंद्र के मंत्री पूरी तरह से तैयार दिखे बड़ी बात यह है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कुछ दिन पहले अपने मन की बात कार्यक्रम में भजनलाल सरकार के कामकाज की अच्छी तारीफ कर चुके थे और भजनलाल सरकार के कामकाज के बारे में देश के अन्य राज्यों की सरकारों को सीख लेने के लिए भी उन्होंने कहा था इसलिए केंद्रीय मंत्रियों ने भी जब यह महसूस किया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी खुद भजनलाल सरकार की प्रशंसा कर चुके हैं तो फिर उन्होंने भी मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से मुलाकात के दौरान ज्यादा सवाल जवाब नहीं किया लेकिन भजन लाल शर्मा ने फिर भी सरकार की विभिन्न योजनाओं के बारे में उन्हें पूरी जानकारी दी और राजस्थान की आवश्यकता के अनुसार उनसे सहयोग मांगा जिस पर सभी मंत्रियों ने भजन लाल शर्मा को हर संभव जरूरत के मुताबिक सहायता प्रदान करने का भरोसा भी दिया।

प्रदेश में भारत आदिवासी पार्टी के विस्तार को रोकने की कोशिश में पूरी प्लानिंग से काम कर रहे भजनलाल शर्मा

प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा भाजपा के संगठन में लंबे समय तक बड़े पद पर रहे इसलिए उन्हें पार्टी के संगठन की तो अच्छी जानकारी है ही इसके अलावा राजस्थान के राजनीतिक परिदृश्य को भी अच्छी तरह से समझते हैं और वे यह भी जानते हैं कि प्रदेश में भारत आदिवासी पार्टी प्रदेश के बागड़ क्षेत्र के अलावा अन्य क्षेत्रों में भी अपना पांव फैलाने का प्रयास कर रहे हैं और भील प्रदेश के गठन की मांग को लेकर आदिवासियों को एकजुट करने का प्रयास कर रहे हैं इसलिए उन्होंने पिछले दिनों बांसवाड़ा में एक विशेष सभा का आयोजन प्रधानमंत्री किसान सम्मन निधि की 20वीं किस्त जारी करने के संदर्भ में आयोजित करवाया और इस कार्यक्रम में उन्होंने भारत आदिवासी पार्टी का नाम लिए बिना सभा में मौजूद लोगों को यह समझाने का प्रयास किया कि भारतीय जनता पार्टी ने भील और आदिवासी समाज के कल्याण और विकास के लिए अनेक योजनाएं शुरू की है उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, राजसमंद, भीलवाड़ा और आसपास के जिलों में व्यापक तौर पर सड़क, पानी, बिजली, शिक्षा, महिला विकास इत्यादि क्षेत्र में अनेक काम करवाए हैं और बगड़ क्षेत्र को पर्यटन और धार्मिक सर्किट के रूप में स्थापित करने की बात भी उन्होंने लोगों से कहीं और यह समझाया कि कुछ लोग अपने स्वार्थ के लिए यहां के युवाओं को और लोगों को आपस में लड़ा रहे हैं क्योंकि वे लोग यह नहीं चाहते की गरीब और मजदूर के बच्चे पढ़ लिखकर अच्छा इंसान बन सके भजन लाल शर्मा ने यह भी कहा कि जो लोग अपने निजी स्वार्थ के लिए युवाओं को आपस में लड़ा रहे हैं उनके बच्चे तो अच्छे स्कूलों में पढ़ते हैं लेकिन यहां के लोगों को आपस में लड़ा

कर गरीब और निर्धन बच्चों को अच्छी शिक्षा से वंचित रखना चाहते हैं, भजनलाल शर्मा ने बिना नाम लिए यह भी कहा कि जिन लोगों पर विश्वास करके वोट दिया था उन लोगों का असली चेहरा भी आपने देख लिया, यह बात भजनलाल शर्मा ने उसे परिदृश्य में कही थी जब कुछ महीने पहले भारत आदिवासी पार्टी के एक विधायक को भ्रष्टाचार के आरोप में एसीबी ने गिरफ्तार

किया था कुल मिलाकर भजन लाल शर्मा ने बांसवाड़ा की इस सभा में बिना नाम लिए भारत आदिवासी पार्टी को कटघरे में खड़ा किया और यह बताने का प्रयास किया कि भारतीय जनता पार्टी की पूरे बागड़ क्षेत्र को विकसित करने के लिए कृत संकल्प है उन्होंने सभा में यह भी कहा कि प्रदेश सरकार की ओर से वन क्षेत्र में पट्टे भी दिए जा रहे कहा कि प्रदेश सरकार की ओर से वन क्षेत्र में बसे लोगों को पट्टा भी दे रही है कुल मिलाकर सभा में भजनलाल शर्मा इसी कोशिश में लग रहे की भील प्रदेश की गठन की मांग को लेकर जिस तरह से भारत आदिवासी पार्टी एक संयोजित रणनीति के तहत अपनी पार्टी का विस्तार करने की कोशिश में लगी है तो भारत आदिवासी पार्टी के इस विस्तार को कैसे रोका जाए इसके लिए उन्होंने बांसवाड़ा की सभा में लोगों को बारीकी से यह बता रहे थे कि बांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, पाली, कोटा, बारा, झालावाड़ के आदिवासी लोगों के कल्याण के लिए भाजपा सरकार पूरी तरह से समर्पित है। भजनलाल शर्मा की इस सभा के बाद कहीं ना कहीं भारत आदिवासी पार्टी के

रणनीतिकारों की रातों की नींद भी उड़ गई थी क्योंकि मुख्यमंत्री ने बहुत ही दमदार तरीके से और तथ्यात्मक तरीके से सभा में मौजूद लोगों के समक्ष अपनी बात रखी थी।

मुख्यमंत्री आवास पर भजनलाल शर्मा खुद लोगों की समस्याओं को सुनते हैं

प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा खुद प्रदेश के लोगों की समस्याओं के निस्तारण के लिए अपनी नियुक्ति के पहले दिन से ही हमेशा काफी गंभीर दिखे हैं और वे खुद हर समस्या की निवारण के लिए कृत संकल्प भी रहे हैं, मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने मंत्रिमंडल के सदस्यों और हर सरकारी विभाग के बड़े अधिकारियों से साफ कहा है की जनसुनवाई के कार्यक्रम को औपचारिक कार्यक्रम नहीं माना जाए बल्कि इस कार्यक्रम में आने वाली प्रत्येक समस्या का निवारण हो इसके लिए सरकारी स्तर पर हर संभव प्रयास किए जाएं अधिकारियों की जिम्मेवारी निर्धारित की जाए और प्रत्येक समस्या के निवारण की प्रक्रिया पर अधिकारी और मंत्री खुद निगाहें रखें और जब तक समस्या का निवारण नहीं हो तब तक उसके बारे में मंत्री और अधिकारी लगातार अपने अधीनस्थ अधिकारी और कर्मचारियों से अपडेट लेते रहे, भजनलाल शर्मा खुद जहां तक हो सके मुख्यमंत्री आवास पर जनसुनवाई कार्यक्रम का आयोजन करते हैं अगर किसी कारणवश जयपुर से बाहर गए हुए हो तो इसके लिए उन्होंने बाकायदा मुख्यमंत्री आवास पर तैनात अधिकारियों को जनसुनवाई कार्यक्रम आयोजित करने की जिम्मेवारी सौंपी गई है शर्मा के मुख्यमंत्री आवास पर नहीं होने पर अधिकारियों की ओर से जनसुनवाई कार्यक्रम का संपादन किया जाता है और इस कार्यक्रम में आने वाली प्रत्येक व्यक्ति की समस्या के निवारण के लिए मुख्यमंत्री आवास हर संभव सरकारी स्तर पर प्रयास भी करता है जिसके अच्छे परिणाम भी सामने आए हैं यही वजह है कि मुख्यमंत्री आवास पर बड़ी संख्या में लोग अपनी समस्याएं लेकर पहुंच भी रहे हैं हालांकि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का कहना है कि प्रदेश में सरकारी विभागों और प्रशासनिक अधिकारियों की ओर से इस तरह से अपनी कार्यशैली को और व्यवहार को अंजाम दिया जाए कि लोगों को अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए मुख्यमंत्री आवास और मंत्रियों के दरबार तक पहुंचना ही नहीं पड़े और शुरू में ही उनकी समस्याओं का निवारण सरकारी स्तर पर हो जाए तो यह प्रदेश सरकार और प्रदेश की ब्यूरोक्रेसी के लिए काफी अच्छा रहेगा। प्रदेश के लोगों को अपनी शिकायतों के लिए मुख्यमंत्री आवास की ओर से ऑनलाइन व्यवस्था भी की गई है जिसके माध्यम से लोग ऑनलाइन भी अपनी शिकायत है दर्ज करवा सकते हैं बड़ी बात यह है कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा जनसुनवाई के कार्यक्रम में आने वाली शिकायतों के निस्तारण का भी नियमित रूप से अपडेट लेते रहते हैं।

पहले वाजपेई का अब नरेन्द्र मोदी का दिल जीता 'अश्विनी वैष्णव' ने

"अश्विनी वैष्णव के नवाचारों और नए प्रयोग से रेलवे में आया क्रांतिकारी बदलाव, विकसित देशों के रेलवे ढांचे की तरह नए कलेवर और नए अंदाज में नजर आने लगा है इंडियन रेलवे"

जयपुर। हीरे की परख जोहरी को ही होती है, जोहरी पत्थर में से भी हीरे को ढूंढ लेता है, हिंदुस्तान की राजनीति में आज की तारीख में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से बड़ा कोई जोहरी है ही नहीं, मोदी वे शख्स हैं जो एक नजर में ही पल भर में इंसान के काबिलियत की परख कर लेते हैं, मोदी भले ही दिल्ली में बैठे हो लेकिन देश भर के ब्यूरोक्रैट्स और राजनेताओं पर उनकी निगाहें रहती हैं और अच्छा काम करने वाले चाहे राजनेता हो या फिर अधिकारी उन्हें अच्छे अवसर प्रदान करके जनता और राष्ट्र की सेवा करने का पूरा अवसर भी देते हैं, ऐसे ही उनकी निगाहें कई साल रेल मंत्री अश्वनी वैष्णव पर टिकी थी जब वैष्णव तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई के दफ्तर में उपसचिव हुआ करते थे उस समय गुजरात का मुख्यमंत्री रहने के दौरान नरेंद्र मोदी का वाजपेई के कार्यालय में आना-जाना लगा रहता था इसलिए नरेंद्र मोदी और अश्वनी वैष्णव के बीच मुलाकात होना आम थी, उस समय ही मोदी अश्विनी वैष्णव की कार्यशैली, व्यवहार और उनकी पर्सनालिटी से काफी प्रभावित हो गए थे उस समय अश्विनी वैष्णव ने पीएम नरेंद्र मोदी के दिल में एक अच्छे ऑफिसर के रूप में जो छवि बना ली थी, उस छवि को नरेंद्र मोदी देश का प्रधानमंत्री बनने के बाद भी नहीं भूल पाए क्योंकि उन्होंने उस समय हिंदुस्तान के ब्यूरोक्रेट्स में एक ऐसे ऑफिसर को ढूंढ निकाला था जो समाज और राष्ट्र के विकास में आगे एक बड़ी भूमिका निभा सकता है आज मोदी की उस सोच को अश्वनी वैष्णव सच भी साबित कर रहे हैं क्योंकि एक तरफ अश्वनी वैष्णव मोदी सरकार के श्रेष्ठ मंत्रियों की सूची में अग्रिम पंक्ति में शामिल हैं तो दूसरी तरफ पीएम नरेंद्र मोदी ने उन्हें जिन जिन डिपार्मेंटों की जिम्मेदारी दी है उन डिपार्टमेंट में अश्वनी वैष्णव ने अपने नवाचारों और नए प्रयोगों से क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं जिसमें भारतीय रेलवे तो पूरी दुनिया में नए लुक में और नए अंदाज में नजर आने लगा है, दुनिया के यूरोपीय विकसित देश रेलवे में जो सुविधा उपभोक्ताओं को देते हैं ठीक उसी तरह की सुविधा भारतीय रेल में आज उपभोक्ताओं को मिल रही है, चाहे रेल में यात्रियों की सुविधा का मामला हो या फिर सुरक्षा का या फिर माल ढुलाई का हर क्षेत्र में भारतीय रेलवे यात्रियों को सुविधा उपलब्ध करवाने में दुनिया भर में अव्वल नजर आ रहा है और अब भारत बुलेट ट्रेन संचालित करने की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है, यह सब रेलवे में जो उत्कृष्ट और उल्लेखनीय कार्य हुए हैं वे रेल मंत्री अपनी वैष्णव की कार्यशैली और नवाचारों के परिणाम ही हैं।

राजस्थान और उडीसा दोनों राज्यों से दिल का रिश्ता है अश्विनी वैष्णव

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव मुख्य रूप से राजस्थान के पाली जिले के जीवंत कला गांव के रहने वाले हैं और इनका ननिहाल खेरवा गांव में है जहां इनका जन्म भी हुआ था लेकिन कई साल पहले इनके पिता देवीलाल पाली जिले से जोधपुर शहर चले गए थे और वे जोधपुर में रहकर ही वकालत और कर सलाहकार के रूप में काम करते थे इसलिए वैष्णव की स्कूली शिक्षा जोधपुर में हुई और जयनारायण विश्वविद्यालय से उन्होंने डिग्री भी हासिल की फिर कानपुर आईआईटी से एमटेक किया तथा 1994 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में 27वीं रैंक हासिल की और इन्हें उड़ीसा कैडर मिला। उड़ीसा में बालेश्वर सुंदरगढ़ कटक सहित कई जिलों के कलेक्टर रहे और 1999 में आई भीषण आपदा में उन्होंने लोगों की खूब सेवा की, उड़ीसा में आई आपदा में राहत कार्यों में अश्वनी वैष्णव के कामों की तारीफ पूरे हिंदुस्तान में हुई और अटल बिहारी वाजपेई भी उनके कामों से काफी प्रभावित हुए थे बाद में अश्विनी वैष्णव प्रतिनयुक्ति पर दिल्ली चले गए। लेकिन उड़ीसा में विभिन्न जिलों में जिला कलेक्टर और अन्य पदों पर रहने के दौरान अश्विनी वैष्णव ने कई बड़े नवाचार और कई बड़े कार्य किया जिसमें गरीब मजदूर और आदिवासी लोगों के कल्याण और उत्थान के लिए अंत्योदय के आधार पर उन्होंने शानदार बेमिसाल काम किया जिसकी वजह से उड़ीसा सरकार की निगाहों में अश्विनी वैष्णव अपने से सीनियर अधिकारियों की तुलना में ज्यादा लोकप्रिय और काबिल अधिकारी बन गए थे, आपदा में उनके कामों की चर्चा उड़ीसा में ही नहीं बल्कि पूरे भारत में हुई और तत्कालीन भारत सरकार भी अश्वनी वैष्णव से काफी प्रभावित हुई। उड़ीसा के लोगों में भी अश्वनी वैष्णव खूब लोकप्रिय अधिकारी के रूप में माने जाने लगे थे इसलिए उड़ीसा राज्य के प्रति भी अश्वनी वैष्णव का दिल का रिश्ता है राजस्थान के तो रहने वाले हैं इसलिए राजस्थान से तो उनका दिल का रास्ता रहेगा ही इसीलिए कुछ साल पहले उन्होंने अपने पाली जिले में स्थित पैतृक गांव में मकान की मरम्मत का काम भी करवाया था और वहां पर उनके परिजनों का आना-जाना भी लगा रहता है इस तरह से अश्वनी वैष्णव का राजस्थान और उड़ीसा दोनों राज्यों से गहरा जुड़ाव है।

भारतीय रेलवे अब विकसित देशों के रेलवे ढांचे को दे रहा है टक्कर, क्रांतिकारी बदलावों से इंडियन रेलवे का नया कलेवर और नया अंदाज

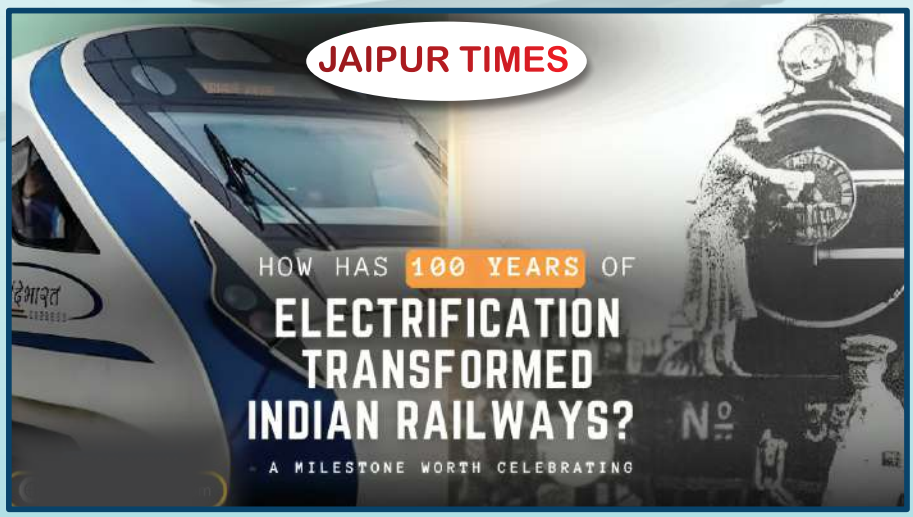

इसमें कोई संदेह नहीं पिछले 10 सालों में भारतीय रेलवे ने उन्नति और प्रगति की जो गाथा लिखी है उससे भारतीय रेलवे का अब नया लुक और नया अंदाज यात्रियों को काफी लुभा रहा है एक तरफ जहां यात्रियों को रेलों में सभी तरह की अत्याधुनिक सुविधाएं मिलने लगी हैं तो दूसरी तरफ रेल दुर्घटनाओं में पहले की तुलना में भारी कमी आई है अब बुलेट ट्रेन संचालन की दिशा में भी भारतीय रेलवे तेजी से आगे बढ़ रहा है 2027 तक बुलेट ट्रेन भारत में दौड़ने लग जाएगी इसके लिए जापान और अन्य देश से तकनीकी रूप से सहयोग लिया जा रहा है, रेल मंत्री के रूप में अश्वनी वैष्णव ने कई नए नवाचार और नए फैसले लिए हैं। इसकी वजह से रेलवे के स्टाफ की कार्य कुशलता और कार्य शैली में क्रांतिकारी बदलाव आया है, देश में अत्याधुनिक तरीके से रेलवे ट्रैक स्थापित किया जा रहे हैं करीब 2000 से ज्यादा रेलवे में कोच बढ़ाई जा रहे हैं अब 1000 नई ट्रेन संचालन की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है, रेल दुर्घटनाओं का आंकड़ा 170 प्रतिशत से घटकर अब 30 प्रतिशत रह गया है उसकी वजह यह है कि रेलवे ट्रैक के मजबूतीकरण और सुधारीकरण के लिए नियमित रूप से रेलवे ट्रैक की मॉनिटरिंग व्यवस्था को मजबूत किया गया है रेलवे सिग्नल व्यवस्था को और मजबूत किया गया है, अत्याधुनिक तरीके से रेलवे ट्रैक स्थापित किया जा रहे हैं, रेलवे बजट में लगातार बढ़ोतरी की जा रही है, नमो भारत और अमृत ट्रेन जैसी ट्रेनों के संचालन से यात्रियों को एक से एक अत्याधुनिक सुविधाएं मिल रही है और इनका किराया भी पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान और बांग्लादेश की तुलना में काफी कम है, यही वजह है कि

वर्ष 2027 में बुलेट ट्रेन का होगा का होगा संचालन

ट्रेनों के प्रति यात्रियों का आकर्षण लगातार बढ़ रहा है रेल दुर्घटनाओं में कमी होने की वजह से ट्रेन में सफर करते समय यात्री खुद को पूरी तरह से सुरक्षित और आरामदायक महसूस कर रहे हैं, ट्रेनों में टिकट बुकिंग की व्यवस्था भी पहले की तुलना में ज्यादा आसान हुई है ऑनलाइन टिकट बुकिंग व्यवस्था को और मजबूत और पारदर्शक तरीके से लागू किया गया है बड़ी बात यह है कि वर्ष 2014 में जहां रेलवे में 20000 करोड़ का निवेश होता था वहां अब रेलवे में 2.52 लाख करोड़ का निवेश होने लगा है जिसमें 20000 करोड़ का निवेश पीपीपी के माध्यम से ही है। ट्रेन में माल ढुलाई के आंकड़े में भी तेजी से बढ़ोतरी हो रही है पहले जहां माल ढुलाई का आंकड़ा 29 प्रतिशत था वह अब बढ़कर 35 प्रतिशत हो रहा है। इन सब तथ्यों की वजह से इंडियन रेलवे अब दुनिया के यूरोपीय विकसित देशों के रेलवे ढांचे को टक्कर देने लगा है, यात्रियों को जो सुविधा विदेश में ट्रेनों में मिलती है इस तरह की सुविधा अब इंडियन रेलवे यात्रियों को उपलब्ध करवा रहा है और देश के पर्यावरण की रक्षा में भी इंडियन रेलवे अब अपनी अहम भूमिका निभा रहा है और पर्यावरण का पूरा ध्यान रखते हुए इंडियन रेलवे अपनी विकास की गाथा को तेजी से आगे बढ़ा रहा है और इन सब अच्छे परिणाम में रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के नवाचार, उनकी नई सोच, और उनकी कार्यशैली की बड़ी भूमिका रही है इसलिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कैबिनेट मंत्रियों की सूची में श्रेष्ठ काम करने वाले मंत्रियों में अश्वनी वैष्णव अग्रिम पंक्ति में नजर आते हैं।

राजनीति में आने से काफी पहले ही छोड़ दी थी भारतीय प्रशासनिक सेवा की नौकरी

हिंदुस्तान की राजनीति में कई अधिकारी ऐसे हैं जो हाई प्रोफाइल सरकारी नौकरी को सिर्फ विधायक और सांसद बनने के लिए ही छोड़े हुए हैं लेकिन अश्वनी वैष्णव ने भारतीय प्रशासनिक सेवा की नौकरी राजनीति में एंट्री करने के लिए नहीं छोड़ी थी, जब केंद्र में अटल बिहारी वाजपेई की सरकार चली गई, इसके बाद अश्वनी वैष्णव ने भी नौकरी छोड़ दी, उसके बाद कुछ सालों तक अटल बिहारी वाजपेई ने अश्विनी वैष्णव को अपना निजी सचिव बनाए रखा लेकिन बाद में 2008 में अश्वनी वैष्णव एमबीए की पढ़ाई के लिए अमेरिका चले गए और वहां प्रतिष्ठित यूनिवर्सिटी में 2 साल की पढ़ाई करने के बाद एमबीए की डिग्री लेकर 2010 में वापस भारत आए, भारत आने के बाद उन्हें कई बड़ी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय नौकरियों में नौकरी के ऑफर मिले उन्होंने कुछ बड़ी कंपनियों में नौकरी भी की लेकिन उनका इन कंपनियों में अच्छी वेतन मिलने के बाद भी नौकरी करने का मन नहीं कर रहा था इसके बाद उन्होंने गुजरात में खुद की भी कुछ कंपनियां स्थापित की इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से समय-समय पर उनकी मुलाकात होती रहती थी, वर्ष 2008 में अश्वनी वैष्णव ने भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता भी ग्रहण कर ली थी लेकिन पार्टी में संगठन के रूप में उन्हें कोई काम नहीं मिला फिर भी भारतीय जनता पार्टी के नेताओं से उनकी मुलाकातें होती रहती थी क्योंकि अटल बिहारी वाजपेई के उप सचिव रहने के दौरान देशभर के भारतीय जनता पार्टी के नेताओं से उनकी जान पहचान हो गई थी इसलिए भाजपा के बड़े नेताओं से उनके अच्छे व्यक्तिगत संबंध बन गए थे नरेंद्र मोदी से उनकी अकसर नियमित रूप से मुलाकात होती रहती थी और प्रधानमंत्री बनने के बाद से ही नरेंद्र मोदी यह चाहते थे कि अश्विनी वैष्णव की योग्यता और उनके कार्य कुशलता का फायदा जनता के लिए उठाया जाए इसलिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल पर 28 जून 2019 को उड़ीसा स्टेट से बीजू जनता दल के सहयोग से भारतीय जनता पार्टी ने अश्विनी वैष्णव को राज्यसभा का सांसद बनवा दिया और फिर जुलाई 2021 से अश्विनी वैष्णव नरेंद्र मोदी की कैबिनेट का हिस्सा भी बन गए।

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई के काफी भरोसेमंद और पसंद के ऑफिसर रहे हैं अश्विनी वैष्णव

अटल बिहारी वाजपेई जब देश के प्रधानमंत्री थे उस समय उड़ीसा में आई भयंकर आपदा की स्थिति में अश्विनी वैष्णव की ओर से किए गए उल्लेखनीय कार्यों की चर्चा पूरे भारत में थी, पीड़ित लोगों की सेवा के लिए अश्वनी वैष्णव ने दिन रात एक कर दिए थे और जरूरतमंद लोगों की हेल्प करने के लिए अपने अधीनस्थ कर्मचारी और अधिकारियों को प्रेरित करते रहे, कई कई रात अश्वनी वैष्णव सोए नहीं और अपनी जान की परवाह किए बिना उन्होंने पीड़ित लोगों की खूब सेवा की, जिनके घर उजड़ गए उन्हें पुनर्वास की व्यवस्था की, जो बेसहारा हो गए उन्हें हर तरह से आर्थिक मदद उपलब्ध करवाई, केंद्र सरकार और राज्य सरकार की ओर से पीड़ितों के लिए भेजे गए एक-एक पैसे का सदुपयोग को इसके लिए वे अपने अधीन राहत कार्य की नियमित रूप से मॉनिटरिंग करते थे ताकि बिचौलिए पैसे ना खा जाए इन सब कामों पर उड़ीसा सरकार और केंद्र सरकार दोनों की निगाहें थी इसलिए अश्विनी वैष्णव की ईमानदारी और उनकी काम के प्रति समर्पण भावना ने उन्हें तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई के दिल में भी एक अलग जगह बना ली थी इसलिए वाजपेई ने उन्हें प्रतिनयुक्ति पर दिल्ली बुलाया और फिर अपने दफ्तर में उपसचिव बनाया।

ईमानदार और समर्पित होने की वजह से ही अश्विनी वैष्णव को मिला रेलवे जैसा डिपार्मेंट

अश्विनी वैष्णव ने भारतीय प्रशासनिक सेवा की नौकरी के दौरान एक ईमानदार और कर्मठ अफसर के रूप में खुद को उड़ीसा में स्थापित किया था जिसकी वजह से उनकी चर्चा पूरे देश में हुई, अश्विनी वैष्णव की ईमानदारी और काम के प्रति उनकी समर्पण भावना ने उन्हें अटल बिहारी वाजपेई और नरेंद्र मोदी को ही काफी प्रभावित किया इसी वजह से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें रेलवे जैसा बाद मंत्रालय सौंपा है इसके अलावा संचार और प्रौद्योगिकी विभाग की जिम्मेवारी भी अश्वनी वैष्णव के पास में है लेकिन रेल मंत्रालय भारत का ही नहीं बल्कि दुनिया भर में सबसे बड़ा मंत्रालय माना जाता है भारतीय रेलवे डिपार्टमेंट दुनिया भर का सबसे बड़ा और विशाल डिपार्टमेंट है इसीलिए लोकसभा में रेलवे का अलग से बजट जारी किया जाता है और यह भी सच है कि रेल मंत्रालय कई बार भ्रष्टाचार जैसे मामलों को लेकर भी पूर्व की केंद्र सरकारों में हमेशा चर्चा का विषय बना रहा लेकिन जब से केंद्र में मोदी सरकार आई है तब से भारतीय रेलवे में भ्रष्टाचार जैसे मामले सामने नहीं आए और जब से अश्वनी वैष्णव ने रेल मंत्रालय अपने हाथ में लिया है तब से रेल मंत्रालय के कामकाज पर किसी ने भी किसी भी बात को लेकर अब तक उंगली नहीं उठाई है संसद में भी रेल मंत्रालय को निशाने पर लेने के लिए विपक्ष के हाथ में कभी कोई ऐसा मामला आया ही नहीं कि वह रेल मंत्रालय को लेकर मोदी सरकार को संसद में कटघरे में खड़ा करें वजह यही है कि रेल मंत्रालय के कामकाज में पारदर्शिता का माहौल कायम करने में अश्वनी वैष्णव काफी सफल हुए हैं अधिकारियों और कर्मचारियों को श्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए वे हमेशा प्रेरित करते रहते हैं और हर काम की लगातार नियमित रूप से मॉनिटरिंग करते रहते हैं। विभागीय कार्यों के लिए टेंडर की व्यवस्था को और पारदर्शक बनाया गया है और रेलवे में नौकरियों की भर्ती की व्यवस्था को भी और मजबूत और पारदर्शक बनाया गया है इन सब नवाचारों और नए प्रयोगों से रेलवे विभाग के कामकाज में काफी सुधार हुआ है।

सुमित गोदारा की अभिनव पहल, 26 लाख लोगों ने छोड़ी खाद्य सुरक्षा योजना

जयपुर। प्रदेश में यह पहला मौका है जब खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग की कार्य शैली और ईमानदारी को लेकर लोग सवाल खड़े नहीं कर रहे, यह पहली बार देखने को मिला है जब पिछले 19 माह में राशन डीलर भी प्रदेश सरकार के व्यवहार और कार्यशैली को लेकर परेशान नहीं है, यह पहली बार देखने को मिला है कि प्रदेश में अब तक 26 लाख लोग खुद खाद्य सुरक्षा योजना को छोड़ चुके हैं, यह पहली बार देखने को मिल रहा है कि प्रदेश में राशन की दुकानों को लेकर प्रदेश के लोगों को किसी भी तरह की कोई शिकायत नहीं है, यह पहली बार देखने को मिल रहा है कि राशन की दुकानों पर निर्धारित सामान लोगों को सही समय पर राशन डीलर की ओर से उपलब्ध करवाया जा रहा है, यह पहली बार देखने को मिल रहा है जब प्रदेश में बड़ी संख्या में लोग गरीबों की रेखा से ऊपर उठ चुके हैं और उन्होंने खुद बड़ी संख्या में आगे बढ़कर खाद्य सुरक्षा योजना से अपना नाम हटाया और यह पहली बार देखने को मिला है जब प्रदेश के खाद्य और नागरिक आपूर्ति विभाग ने बड़ी संख्या में नए गरीब लोगों को खाद्य सुरक्षा योजना से जोड़ा है यह पहली बार देखने को मिला है जब खाद्य और नागरिक आपूर्ति विभाग में भ्रष्टाचार जैसी शिकायतें बिल्कुल भी सुनने को नहीं मिल रही, यह अच्छे काम का सिलसिला जो शुरू हुआ है उसमें प्रदेश के खाद्य और नागरिक आपूर्ति विभाग के मंत्री सुमित गोदारा की कड़ी मेहनत और उनके श्रेष्ठ प्रबंधन की वजह से ही आज प्रदेश का खाद्य और नागरिक आपूर्ति विभाग अपनी बदनामी की छवि से उभर चुका है और प्रदेश के लोग अब अच्छी निगाहों से खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग देखने लगे हैं प्रदेश के गरीब लोगों के लिए प्रदेश की भजनलाल सरकार एक तरफ जहां वरदान बन गई है तो दूसरी तरफ खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग के मंत्री सुमित गोदारा गरीबों के एक तरीके से मसीहा के रूप में सामने आए हैं।

अब तक 26 लाख सक्षम लोग छोड़ चुके हैं खाद्य सुरक्षा योजना

प्रदेश में खबर लिखे जाने तक करीब 26 लाख सक्षम लोग खाद्य सुरक्षा योजना को छोड़ चुके थे अभी 31 अगस्त तक प्रदेश सरकार ने सक्षम लोगों को निर्देशित किया हुआ है कि वे खुद आगे बढ़कर अपना नाम खाद्य सुरक्षा योजना से हटा ले अन्यथा फिर सरकार सक्षम लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई भी कर सकती है और जुर्माना भी वसूल करेगी, इस विभाग के मंत्री के तौर पर सुमित गोदारा ने प्रदेश भर में सक्षम लोगों तक सरकार का यह कड़ा संदेश भिजवाने के लिए कई तरह के तरीके अपनाए इसके लिए खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग के प्रवर्तन अधिकारियों और प्रवर्तन निरीक्षकों को भी निर्देशित किया गया कि पब्लिक में गिव अप अभियान को ज्यादा प्रचारित करने के लिए कहा गया इसके फलस्वरूप खाद्य और नागरिक आपूर्ति विभाग की ओर से भी प्रदेश के कोने-कोने में सक्षम लोगों को खाद्य सुरक्षा से हटने के लिए प्रेरित किया गया, इसके लिए खाद्य मंत्री सुमित गोदारा ने विभाग के अधिकारियों से कहा कि इस कार्य में ग्राम पंचायत प्रशासन से भी सहयोग लिया जा सकता है इसके अलावा जिला प्रशासन और जनप्रतिनिधियों के माध्यम से भी गिव अप अभियान को सफल बनाया जा सकता है जिसमें सरकार को सफलता भी मिली है और बड़ी संख्या में लोगों ने आगे बढ़कर खाद्य सुरक्षा योजना से नाम भी हटवाया है जो निश्चित रूप से गरीबों के लिए काफी फायदेमंद साबित होगी जो गरीब परिवार अब तक इस योजना का लाभ नहीं उठा पा रहे थे उन परिवारों को इस योजना से जोड़ने के लिए खाद्य नागरिक आपूर्ति विभाग की ओर से युद्ध स्तर पर प्रयास किया जा रहे हैं।

31 अगस्त के बाद सरकार अपने स्तर पर सक्षम लोगों के खिलाफ करेगी कार्रवाई

प्रदेश सरकार ने गिव अप अभियान को 31 अगस्त तक संचालित करने की बात कही है 31 अगस्त तक सक्षम लोगों को खाद्य सुरक्षा योजना को छोड़ने को कहा गया है इसलिए इस योजना से आने वाले दिनों में भी बड़ी संख्या में सक्षम लोग अपना नाम हटवा सकते हैं क्योंकि नाम हटाने का काम पूरे प्रदेश भर में जोरो से जारी है और अगर 31 अगस्त तक जिस सक्षम व्यक्ति ने इस योजना से नाम नहीं हटाया तो फिर 31 अगस्त के बाद खाद्य सुरक्षा विभाग की ओर से अपने स्तर पर खाद्य सुरक्षा योजना में शामिल लोगों की वस्तु स्थिति का आकलन किया जाएगा और इस आकलन में जो भी सक्षम व्यक्ति होगा उसका नाम तो हटाया ही जाएगा इसके अलावा सरकार उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई भी कर सकती है और सक्षम व्यक्ति से जुर्माना भी वसूल कर सकती है इसलिए अब 31 अगस्त के बाद यह देखने वाली बात होगी कि खाद्य और सुरक्षा विभाग की ओर से किस तरह से कार्रवाई को अंजाम देकर सक्षम लोगों को खाद्य सुरक्षा योजना से हटाया जाएगा।

मोदी की न खाऊंगा, न खाने दूंगा की नीति पर काम कर रहे सुमित गोदारा

प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की ईमानदार राजनेताओं में गिनती होती है और पिछले 19 माह में प्रदेश की भजनलाल सरकार के किसी भी मंत्री पर किसी भी तरह का कोई गलत आरोप नहीं लगा है, भ्रष्टाचार की मामूली शिकायत भी नहीं मिली है, प्रदेश के खाद्य और नागरिक आपूर्ति विभाग के मंत्री सुमित गोदारा ने भी अपने विभाग के सभी बड़े अधिकारियों और कर्मचारियों को यह मैसेज पहले ही दिन दे दिया था जब उन्होंने इस विभाग की जिम्मेवारी अपने हाथ में ली थी उन्होंने कह दिया था कि ना मैं खाऊंगा ना खाने दूंगा यानी सुमित गोदारा पीएम नरेंद्र मोदी की नीति पर खुद कार्य कर रहे हैं और अपने विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों को भी ईमानदारी से काम करने के लिए उत्साहित और प्रेरित भी कर रहे हैं जिसके अच्छे परिणाम भी सामने आए हैं खाद्य और नागरिक आपूर्ति विभाग में पिछले 19 माह में भ्रष्टाचार को लेकर खाद्य और नागरिक आपूर्ति विभाग बिल्कुल भी सुर्खियों में नहीं रहा अन्यथा पिछले कई सालों से यह विभाग भ्रष्टाचार की गतिविधियों को लेकर और अपने कार्य शैली को लेकर प्रदेश के लोगों में और मीडिया में सुर्खियों में बना रहता था लेकिन प्रदेश में भाजपा की सरकार के गठन के बाद और सुमित गोदारा के इस विभाग की बागडोर हाथ में लेने के बाद जो क्रांतिकारी बदलाव इस विभाग के कामकाज में आया है उसी का नतीजा है कि लोग इस विभाग को अच्छी नजर से देखने लगे हैं।

राजस्थान में भी बड़ी संख्या में गरीबी रेखा से ऊपर उठे हैं लोग

जिस तरह से प्रदेश में 26 लाख सक्षम लोगों ने खाद्य सुरक्षा योजना को छोड़ा है उससे साफ जाहिर है कि प्रदेश में 26 लाख लोग गरीबी रेखा से ऊपर उठे हैं यानी बड़ी संख्या में गरीबों की आर्थिक स्थिति सुधरी है इसलिए डबल इंजन की सरकार अब यह बात छाती ठोकर भी कह सकती है कि केंद्र की मोदी सरकार के सहयोग से प्रदेश में गरीब परिवारों की हालत तेजी से सुधर रही है और बहुत से परिवार सक्षम स्थिति में पहुंच भी गए हैं इसी वजह से बड़ी संख्या में लोगों ने खाद्य सुरक्षा योजना को छोड़ा है हालांकि राजस्थान ही नहीं बल्कि देश के अन्य राज्यों में भी गरीबों की रेखा से ऊपर उठने वाले लोगों की संख्या में तेजी से इजाफा हो रहा है लेकिन इस कार्य में प्रदेश की भजनलाल सरकार देश के अन्य राज्यों की सरकारों से काफी नजर आ रही है। जानकार लोगों का कहना है कि पिछले 19 माह में प्रदेश की भजनलाल सरकार ने प्रदेश में रोजगार के अवसर पैदा करने में तेजी से कम कर रही है इसके लिए एक तरफ जहां बड़ी संख्या में सरकारी नौकरी दी गई तो दूसरी तरफ नीचे क्षेत्र में भी सरकार ने प्रदेश के युवाओं को ज्यादा से ज्यादा मौका देने के लिए निजी कंपनियां को पाबंद भी किया है प्रदेश सरकार के खाद्य मंत्री सुमित गोदारा खुद भी मानते हैं कि राजस्थान में गरीबों की हालत तेजी से सुधर रही है इस कार्य में प्रदेश सरकार केंद्र सरकार के सहयोग से लगातार गरीबों और मजदूरों की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए काम कर रही है जिसके अच्छे परिणाम भी सामने आ रहे हैं।

प्रदेश के राशन डीलरों को लेकर भी प्रदेश के लोगों में अब नहीं हैं नाराजी

प्रदेश में खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग पहली बार ईमानदारी को लेकर चर्चा में, गरीब भी खुश तो राशन डीलर भी है खुश

प्रदेश के राशन डीलर हमेशा से अपनी कार्यशैली और व्यवहार को लेकर लोगों के निशाने पर रहे हैं चाहे प्रदेश में किसी भी पार्टी की सरकार रही हो राशन डीलरों को लेकर लोगों की शिकायतें हमेशा बनी रही और सरकार खुद भी यह मानती रही कि कहीं ना कहीं राशन डीलर अपनी जिम्मेवारी को ठीक तरह से नहीं निभाते लेकिन इसके बावजूद भी सरकार राशन डीलरों को लेकर ज्यादा गंभीर नजर नहीं आई जिसकी वजह से राशन डीलर को लेकर लोगों में हमेशा नाराजगी बनी रहती थी लेकिन प्रदेश में भाजपा की सरकार के गठन के बाद खाद्य और नागरिक आपूर्ति विभाग की ओर से राशन डीलरों की गतिविधियों पर अंकुश लगाने और राशन डीलरों को ईमानदारी से काम करने के लिए प्रेरित करने के संदर्भ में जो नवाचार किए गए और जो नए कदम उठाए गए उसके अच्छे परिणाम भी सामने आए हैं यह नवाचार मंत्री सुमित गोदारा की पहल पर किए गए इसमें चाहे राशन डीलर का कमीशन बढ़ाने की बात हो या फिर मृत राशन डीलर के परिवार को राहत देने की बात हो इन महत्वपूर्ण विषयों पर भजनलाल सरकार ने सकारात्मक रवैया राशन डीलर के प्रति दिखाए इसके बाद कहीं ना कहीं राशन डीलर की कार्यशैली और व्यवहार में काफी कुछ बदलाव आया उसी का नतीजा है कि पिछले 19 माह में राशन डीलर को लेकर प्रदेश के लोगों में कोई ज्यादा नाराजगी का भाव देखने को नहीं मिला है चाहे राशन डीलर की दुकान खुलने और बंद होने के समय की बात हो या फिर राशन डीलर की ओर से वितरित की जाने वाली सामग्री की बात हो या फिर सामग्री के नापतोल की बात हो इन सब विषयों पर पहले जिस तरह से लोग राशन डीलर को लेकर शिकायत करते रहते थे उस तरह की शिकायतें अब सुनने को नहीं मिल रही जो यह दिखाता है कि कहीं ना कहीं प्रदेश के लोग और राशन डीलर के प्रति आपस में अच्छा व्यवहार और समन्वय बना हुआ है, राशन डीलर भी कहीं ना कहीं अपनी मांगों को लेकर सरकार से संतुष्ट है सरकार के व्यवहार से संतुष्ट है जिसकी वजह से वह पहले की तुलना में अब अच्छी तरह से अपनी जिम्मेवारी को निभा कर लोगों को समय पर राशन की सामग्री ईमानदारी से वितरित कर रहे हैं, जानकार लोगों का कहना है कि सुमित गोदारा एक सुलझे हुए ईमानदार राजनेता हैं दो बार के विधायक हैं और ग्रामीण और शहरी दोनों परिवेश की अच्छी जानकारी रखते हैं इसलिए राशन डीलर की परेशानियों से भी वह अच्छी तरह से वाकिफ थे तो लोगों को राशन डीलर से क्या-क्या परेशानी हो रही है इस बात को भी अच्छी तरह से जानते थे इसलिए उन्होंने मंत्री के तौर पर काम करते हुए राशन डीलर की समस्याओं को भी गंभीरता से दूर करने का प्रयास किया जिसकी वजह से राशन डीलर को भी यह महसूस होने लगा कि इस बार में सरकार उनके और उनके परिवार वालों को लेकर काफी संवेदनशील है राशन डीलरों का कमीशन बढ़ाने की वजह से भी राशन डीलरों के कार्यशैली और व्यवहार में बदलाव आया जिसके अच्छे नतीजे भी सामने आ रहे हैं लोग अब राशन डीलर को लेकर ज्यादा शिकायत करते हुए नजर नहीं आते।

राजनीति में दादी से आगे निकली दिया कुमारी

"जयपुर राजघराना की पूर्व राजमाता और जयपुर शहर से तीन बार सांसद रही दिवंगत गायत्री देवी को लोकप्रियता, व्यक्तित्व और पब्लिक संपर्क हर मामले में दिया कुमारी ने पीछे छोड़ा और राजस्थान भाजपा में भी भरी ऊंची उड़ान"

जयपुर। प्रदेश की उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने लोकप्रियता, व्यक्तित्व और लोगों से जुड़ाव के मामले में अपनी दादी पूर्व राजमाता दिवंगत गायत्री देवी को भी पीछे छोड़ दिया है हालांकि गायत्री देवी जयपुर शहर लोक सभा सीट से तीन बार सांसद रही हैं और अपने जमाने में दुनिया की खूबसूरत महिलाओं में उनकी गिनती हुआ करती थी और उनकी व्यक्तित्व से स्वर्गीय इंदिरा गांधी भी जलन रखती थी इसलिए गायत्री देवी जब तक जीवित रही उन्हें जयपुर ही नहीं बल्कि दुनिया भर के लोगों का प्यार और सम्मान मिला लेकिन वर्ष 2014 से अब तक भारतीय जनता पार्टी में दिया कुमारी का जो सफर रहा है उस पर गौर करें तो साफ नजर आता है कि दिया कुमारी ने जयपुर राजघराने के नाम और सम्मान को बरकरार रखा है और कहीं ना कहीं लोकप्रियता और पब्लिक से जुड़ाव के मामले में अपनी सौतेली दादी गायत्री देवी को पीछे छोड़ दिया है, हालांकि जयपुर राजघराने के सम्मान और गौरव को बढ़ाने में दिया कुमारी के पिता स्वर्गीय भवानी सिंह का भी उल्लेखनीय योगदान रहा और फौज में सर्विस के दौरान पाकिस्तान से युद्ध में अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन करके जयपुर राज घराने और जयपुर शहर दोनों का गौरव तो बढ़ाया जिसके फलस्वरूप उन्हें महावीर चक्र पुरस्कार भी मिला, यह बात अलग है कि राजनीति उन्हें रास नहीं आई लेकिन दिया कुमारी ने बहुत कम अवधि में ही भारतीय जनता जनता पार्टी में तो अच्छा मुकाम हासिल किया ही है

इसके अलावा प्रदेश के लोगों में जो लोकप्रियता हासिल की है उससे राजनीतिक विश्लेषक और भाजपा के रणनीतिकार दिया कुमारी को वसुंधरा राजे का विकल्प भी बताने लगे हैं, दिया कुमारी वर्तमान में उपमुख्यमंत्री पद पर हैं और वित्त विभाग सहित आधा दर्जन महत्वपूर्ण विभाग की जिम्मेवारी संभाले हुए हैं और हर विभाग का अब तक श्रेष्ठ संचालन किया है जिसकी वजह से मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और दिल्ली में विराजमान भारतीय जनता पार्टी के सभी बड़े नेता दिया कुमारी के प्रदर्शन से काफी प्रभावित भी हैं इसलिए हर कोई यह कहने लगा है कि भले ही भवानी सिंह राजनीति में सक्सेस नहीं हुए हो लेकिन उनकी बेटी न केवल सक्सेस राजनेता के रूप में खुद को स्थापित किया है बल्कि लोगों से उनका गहरा दिल से जुड़ाव उन्हें और महान नेता के रूप में प्रदर्शित कर रहा है।

1989 में राजा और रंक की लड़ाई में गिरधारीलाल भार्गव से हार गए थे भवानीसिंह

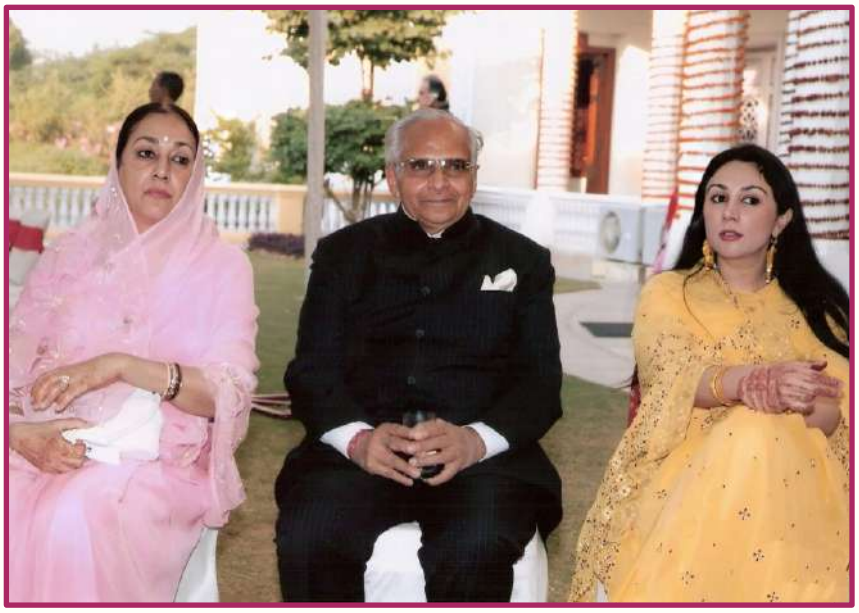

स्वर्गीय इंदिरा गांधी और जयपुर राजघराने के बीच हमेशा टकरा रहे, जब तक इंदिरा गांधी जीवित रही तब तक इंदिरा गांधी और दिवंगत राजमाता गायत्री देवी के बीच राजनीतिक और व्यक्तिगत लड़ाई हमेशा बनी रही, लड़ाई इतनी आगे बढ़ गई थी कि जब संजय गांधी की विमान हादसे में मौत हुई तो गायत्री देवी ने फोन करके इंदिरा गांधी को सांत्वना देने का प्रयास किया लेकिन इंदिरा गांधी ने गायत्री देवी से फोन पर बात करने के लिए मना कर दिया बाद में 1975 में इमरजेंसी के दौरान इंदिरा गांधी ने गायत्री देवी और उनके बेटे भवानी सिंह दोनों को जेल में भी डाला यह बात अलग है कि इंदिरा गांधी के निधन के बाद 1989 में कांग्रेस पार्टी की ओर से जयपुर शहर सीट से भवानी सिंह को उम्मीदवार बनाया गया और भारतीय जनता पार्टी ने गिरधारी लाल भार्गव को टिकट दिया, भाजपा ने चुनाव प्रचार के दौरान राजा और रंक की लड़ाई का नारा बुलंद करके जयपुर के लोगों का विश्वास हासिल करने का प्रयास किया जिसने भारतीय जनता पार्टी को सफलता भी मिली और राजा और रंक की इस लड़ाई में गिरधारी लाल भार्गव ने भवानी सिंह को हरा दिया। यह भवानी सिंह का पहला ही चुनाव था और पहले ही चुनाव में उन्हें जिस तरह से पराजय का सामना करना पड़ा उससे उन्हें झटका भी लगा क्योंकि फौज में सर्विस के दौरान भवानी सिंह ने भारत का नाम ऊंचा किया था और नौकरी के दौरान भारत सरकार से औपचारिकता के तौर पर वेतन के तौर पर सिर्फ 1 रुपया लिया करते थे जिसकी चर्चा आमजन में खूब हुआ करती थी लोग भवानी सिंह को पूरा आदर और सम्मान भी दिया करते थे लेकिन चुनाव में जयपुर के लोगों ने कहीं ना कहीं उनसे दूरियां बना ली जिसकी वजह से चुनाव हार गए, यह पहला मौका था जब जयपुर राजघराने का कोई सदस्य चुनाव हार हो क्योंकि 1962 में स्वतंत्र पार्टी के बैनर के तले जयपुर शहर लोकसभा सीट से भवानी सिंह की माता गायत्री देवी सांसद चुनी गई थी इसके बाद 1967 और 1971 चुनाव में भी गायत्री देवी सांसद चुनी गई लेकिन भवानी सिंह अपना पहले ही चुनाव हार गए। चुनाव हारने के बाद दोबारा फिर कभी भवानी सिंह ने चुनाव नहीं लड़ा और ना ही राजनीति में उन्होंने अपनी कोई दिलचस्पी दिखाई।

राज परिवार से तालुक्क रखने के बावजूद भी दिया कुमारी का लोगों से है गहरा जुड़ाव

हिंदुस्तान के प्रमुख राजघराने में जयपुर राजघराने की गिनती होती है, जयपुर के लोगों का भी जयपुर राज परिवार से गहरा रिश्ता है, दिया कुमारी भवानी सिंह की इकलौती बेटी हैं लाड प्यार में पलकर बड़ी हुई और हाई प्रोफाइल स्टडी भी की है इन सबके बावजूद भी दिया कुमारी का व्यवहार और उनकी सादगी लोगों को काफी पसंद है, व्यक्तित्व और सुंदरता के मामले में भी लोग इनकी तुलना उनकी दादी गायत्री देवी से करते हैं, जहां भी जाती हैं इन्हें देखने के लिए लोगों की भीड़ जमा हो जाती हैं, महिलाओं में और युवाओं में दिया कुमारी की लोकप्रियता देखते ही बनती हैं, बड़ी बात यह है कि लोग बेहिचक कभी भी इनके सरकारी आवास या निजी आवास पर आकर मिल सकते हैं, लोगों की शिकायतें सुनने के लिए बाकायदा अपना पर्सनल स्टाफ तैनात किया हुआ है लोगों से जब मिलती हैं तो उनके व्यवहार और बॉडी लैंग्वेज में यह बिल्कुल भी नजर नहीं आता कि वे एक प्रतिष्ठित राज परिवार से जुड़ी हुई है, लोग आपस में अक्सर चर्चा करते रहते हैं कि जयपुर राजघराने की दिया कुमारी अकेली सदस्य हैं जो गरीब अमीर हर जाति और बिरादरी के लोगों से हर समय मिलने के लिए तैयार खड़ी रहती हैं और लोगों से ऐसे मिलती हैं जैसे लोग उनके परिवार के ही सदस्य हैं यही वजह है कि अब तक अलग-अलग जगह से तीन चुनाव लड़े लेकिन तीनों जीते उसका बड़ा कारण यही है कि प्रतिष्ठित राज परिवार का सदस्य होने के बावजूद भी उनमें किसी भी तरह का कोई घमंड, गुरूर और वीआईपी कल्चर नजर नहीं आता जो उन्हें अपने आप में एक अलग श्रेणी के श्रेष्ठ राजनेता के रूप में स्थापित किए हुए हैं।

दिया कुमारी ने अब तक तीन चुनाव लड़े और तीनों जीते

ही में 2023 के विधानसभा चुनाव में जयपुर की विद्याधर नगर सीट से उन्हें भाजपा ने अपना उम्मीदवार बनाया इस सीट से लगातार पूर्व उपराष्ट्रपति दिवंगत भैरोंसिंह शेखावत के दामाद नरपत सिंह राजवी लगातार तीसरी बार विधायक बने हुए थे लेकिन 2023 के विधानसभा चुनाव में उन्हें टिकट नहीं दिया गया और दिया कुमारी को यहां से टिकट दिया इसके बाद राजवी और उनके समर्थकों में असंतोष बढ़ा गया था जिस पर पार्टी ने राजवी को उनके पुराने निर्वाचन क्षेत्र चित्तौड़गढ़ से टिकट दिया लेकिन इस सीट से राजवी चुनाव नहीं जीत पाए इधर दिया कुमारी करीब 71000 हजार वोटो से चुनाव जीत कर सबको चकित कर दिया। इस तरह से दिया कुमारी ने 2013 से लेकर अब तक अलग-अलग तीन जगह से चुनाव लड़े और तीनों जीते जो उनकी लोकप्रियता को साबित करता है।

प्रदेश में वर्ष 2013 के विधानसभा चुनाव से ठीक पहले दिया कुमारी ने भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण की थी उस समय तत्कालीन मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के कहने पर दिया कुमारी ने भाजपा ज्वाइन की और पार्टी ने उन्हें सवाई माधोपुर विधानसभा सीट से उम्मीदवार बनाया जिसमें अपने पहले ही चुनाव में दिया कुमारी ने शानदार सफलता हासिल की, जयपुर से दूर सवाई माधोपुर से दिया कुमारी का अपना पहले ही चुनाव जीतना कोई छोटी बात नहीं थी बाद में विधानसभा में दिया कुमारी ने अपने निर्वाचन क्षेत्र की समस्याओं को शानदार तरीके से उठाया और अपनी ही पार्टी के सरकार से अपने निर्वाचन क्षेत्र में शानदार काम करवाए इसकी वजह से अब भी सवाई माधोपुर की जनता का दिया कुमारी से सीधा जुड़ाव बना हुआ है बाद में 2019 के लोकसभा चुनाव में दिया कुमारी को जयपुर से काफी दूर राजसमंद से लोकसभा का टिकट दिया गया यहां भी दिया कुमारी ने शानदार सफलता हासिल की, यहां भी सांसद के तौर पर दिया कुमारी का शानदार कार्यकाल रहा, राजसमंद के लोग अब भी दिया कुमारी को अपना नेता मानते हैं और उन्हें दिल से लगाए हुए हैं इसके बाद हाल

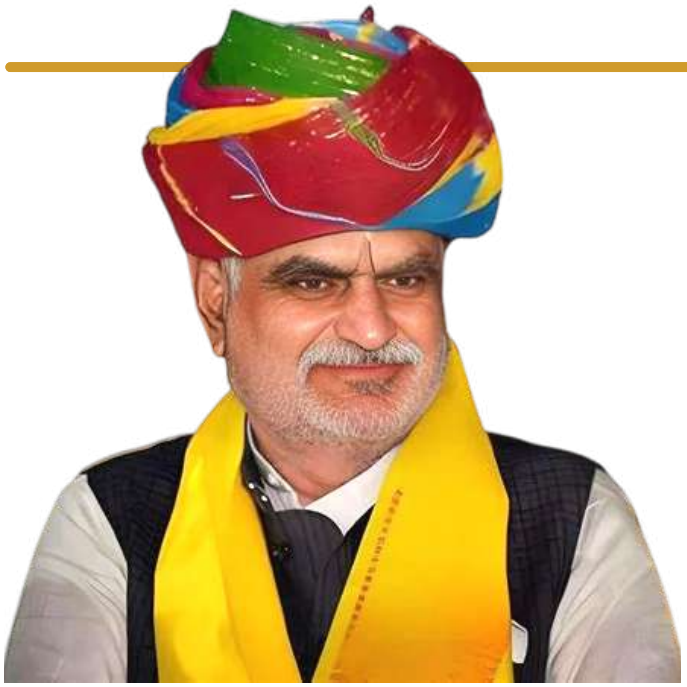

पिता के सपनों को साकार कर रहे झाबरसिंह खर्रा, शहरों को नया लुक देने के लिए कर रहे है कड़ी मेहनत

> "खर्रा के श्रेष्ठ निर्देशन और उनकी नई नवीन सोच, प्रयोग से प्रदेश के विभिन्न शहर को आधुनिक नया लुक देने की भरपूर कोशिश, शहरी नगरी विभाग की कार्यशैली में भी आ रहा क्रांतिकारी बदलाव, विभाग में डिजिटल सिस्टम को मजबूती से लागू कर ईमानदारी और पारदर्शिक तरीके से संपादित किया जा रहे लोगों के काम, श्रेष्ठ मंत्री को तौर पर खुद को किया साबित और मुख्यमंत्री का दिल जीतने में रहे कामयाब"

जयपुर। प्रदेश के भजन लाल सरकार के मंत्रिमंडल की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि मंत्रिमंडल के अधिकांश सदस्य ग्रामीण इलाकों से ताल्लुक रखते हैं जिसकी वजह से यह सभी मंत्री एक और जहां ग्रामीण इलाकों के विकास और ग्रामीण लोगों के जीवन को खुशहाल बनाने में मंत्री स्तर पर कोई कमी बाकी नहीं छोड़ रहे तो दूसरी तरफ इन मंत्रियों की परंपरागत संस्कार वाली जीवन शैली, सादगी और ईमानदारी भी लोगों को काफी प्रभावित करती है जो भजनलाल सरकार देश के अन्य राज्यों की सरकारों से अलग करती है यही वजह है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने मन की बात कार्यक्रम में भजनलाल सरकार के कामों की खूब तारीफ की, बड़ी बात यह है कि पिछले 19 महीना में सरकार के किसी भी मंत्री पर भ्रष्टाचार के मामले पर किसी ने भी उंगली नहीं उठाई सभी मंत्री अपनी जिम्मेवारी और दायित्व को बखूबी से निभाते नजर आ रहे हैं जिनमें कुछ मंत्री तो ऐसे हैं जिन्हें भले ही विरासत में राजनीति मिली हो लेकिन उन्होंने राजनीति में कदम रखने के बाद अपने अनुभव और कार्य शैली से जो मुकाम हासिल किया है उससे

उनके दिवंगत पुरखों की आत्माओं को भी शांति मिल रही है, ऐसे राजनेताओं की सूची में सबसे टॉप पर झाबर सिंह खर्रा नजर आ रहे हैं जिन्हें भले ही विरासत में राजनीति मिली हो लेकिन अपने अच्छे व्यवहार सादगी, नई सोच, काम के प्रति निष्ठा और ईमानदारी से राजस्थान की राजनीति में खुद को एक श्रेष्ठ राजनेता के रूप में तो स्थापित किया हुआ है ही इसके अलावा प्रदेश के भजनलाल सरकार में मंत्री के तौर पर अपनी उल्लेखनीय कामों से श्रेष्ठ मंत्रियों की सूची में खुद को शामिल किया हुआ है, आज भले ही इनके पिता हरलाल सिंह खर्रा जीवित नहीं है लेकिन उनकी आत्मा अपने पुत्र के उल्लेखनीय कामों और उनके लोगों से गहरे जुड़ाव को देखकर निश्चित रूप से काफी प्रसन्न हो रही होगी।

पिता हरलाल सिंह खर्रा की तरह पब्लिक में है लोकप्रिय

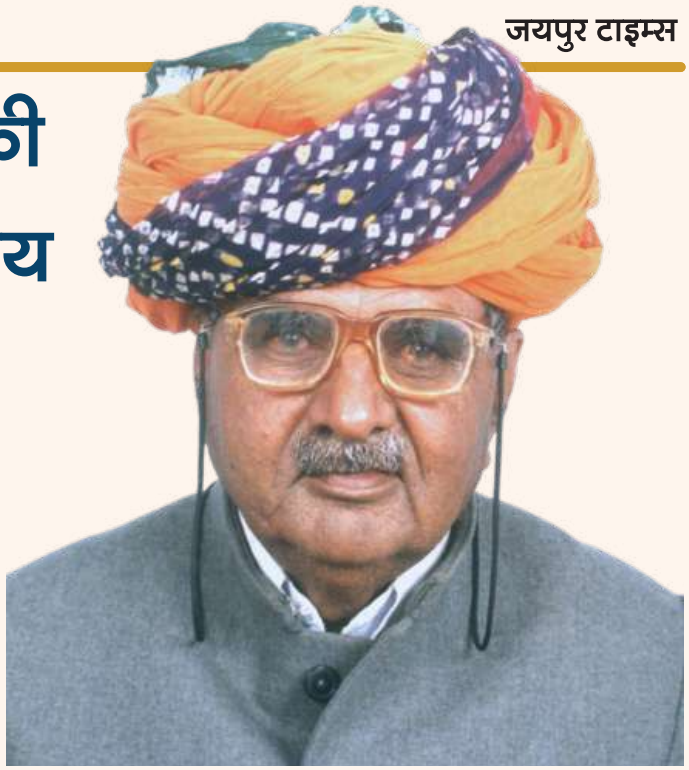

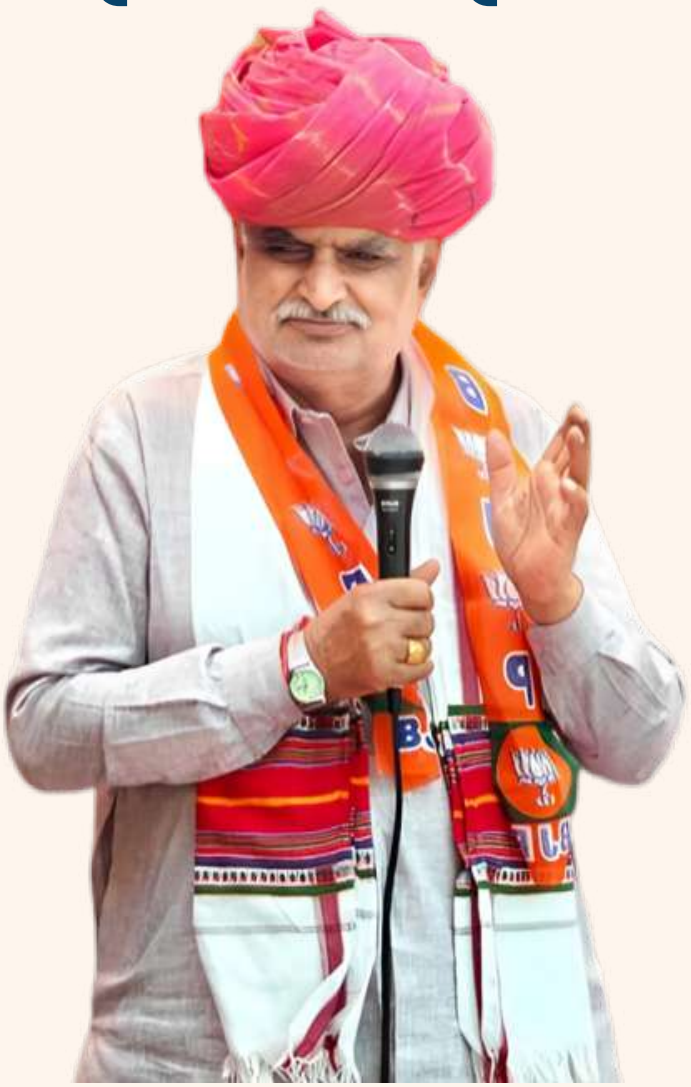

यूडीएच मंत्री झाबर सिंह खर्रा अपने पिता हरलाल सिंह खर्रा को पूरी तरह से फॉलो कर रहे हैं, हरलाल सिंह खर्रा श्रीमाधोपुर से विधायक रहे और एक बार प्रदेश के पंचायत राज मंत्री भी रहे, हरलाल सिंह खर्रा का राजस्थान की राजनीति में बड़ा नाम था, किसान और जाट नेता के रूप में शेखावाटी में उनका बड़ा नाम था और जमीन से जुड़े नेता माने जाते थे तथा जब तक जीवित रहे काफी सादगी पूर्ण तरीके से अपना जीवन और किसानों के बीच रहकर ही बिताया, वे हमेशा ग्रामीण इलाकों में खुशहाली लाने के लिए मजबूती से प्रयास करते नजर आए, ग्रामीण इलाकों का समुचित विकास हो और किसान मजदूर वर्ग के परिवार आर्थिक रूप से मजबूत हो इसके लिए उन्होंने अपने स्तर पर हर संभव प्रयास किया तथा शहरों और गांव के नियोजित तरीके से विकास पर बोल देते रहे ठीक उसी तरह से उनके पुत्र झाबर सिंह खर्रा अपने पिता के कामों और उनके व्यवहार से प्रेरित होकर ना केवल श्रीमाधोपुर विधानसभा क्षेत्र के लोगों में अपनी पिता की तरह मजबूत पकड़ बना ली है बल्कि मंत्री के रूप में उनके कामों को पूरे राजस्थान में सराहा जा रहा है, अपने पिता हरलाल सिंह खर्रा की तरह ही उनकी जीवन शैली है, जैसे हरलाल सिंह खर्रा दिखते थे ठीक उसी तरह से झाबर सिंह खर्रा भी नजर आते हैं, कपड़े, बोलचाल, कार्यशैली, सोच और सर पर पगड़ी इत्यादि सब कुछ उनमें हरलाल सिंह खर्रा की तरह ही नजर आता है, जैसे हरलाल सिंह खर्रा गांव के नियोजित तरीके से सर्वांगीण विकास के कृत संकल्प रहे ठीक उसी तरह से झाबर सिंह खर्रा भी शहर और गांव दोनों के नियोजित सर्वांगीण विकास के लिए कृत संकल्प नजर आ रहे हैं हालांकि झाबर सिंह खर्रा के पास वर्तमान में यूडीएच विभाग है इसलिए शहर के नियोजित विकास की जिम्मेवारी तो उनके कंधों पर है ही लेकिन गांव के नियोजित विकास की बात को भी वे कैबिनेट की मीटिंग में और विधानसभा में उठते रहे हैं। हरलाल सिंह खर्रा खुद खेती करते थे तो आज झाबर सिंह खर्रा के दोनों बेटे खेती करते हैं कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि जिस तरह से हरलाल सिंह खर्रा पांच बार विधायक रहे और एक बार मंत्री रहे इसके बावजूद भी उनकी दिनचर्या और जीवन शैली गांव से जुड़ी रही, हाई प्रोफाइल लाइफस्टाइल को ना तो खुद पर और ना ही अपने परिवार वालों पर भी हावी नहीं होने दिया और हमेशा सदा जीवन जीते रहे ठीक वैसे ही दिनचर्या और जीवन शैली झाबर सिंह खर्रा की है जो खुद सादगी से जीवन जी रहे हैं और अपने बच्चों को भी सादगी से जीवन जीने के लिए प्रेरित कर रहे हैं यही वजह है कि उनके दोनों बच्चे खेती के व्यवसाय से जुड़े हुए हैं।

नए मास्टर प्लान से प्रदेश के विभिन्न शहरों के नियोजित विकास को गति देने का प्रयास, स्मार्ट सिटी परियोजना का भी बेहतर तरीके से कर रहे हैं निर्देशन

नया मास्टर प्लान की रूपरेखा तैयार करने में यूडीएच मंत्री झाबरसिंह खर्रा की बड़ी भूमिका रही है, अपने पिता की तरह ही झाबर सिंह खर्रा प्रदेश के विभिन्न शहरों के नियोजित विस्तार और विकास का समर्थन करते रहे हैं जब मंत्री नहीं बने थे और विधायक थे तब भी वे सदन के अंदर और सदन के बाहर दोनों जगह पर शहर और गांव दोनों के नियोजित विकास की बात प्रमुखता से कहते थे, हालांकि वर्तमान में झाबर सिंह खर्रा के पास नगरीय विकास विभाग ही है, इसलिए प्रदेश के शहर के समुचित विकास और नियोजित विकास की ओर उनका पूरा फोकस है लेकिन गांव के नियोजित विकास की बात भी हमेशा सरकार से जुड़ी महत्वपूर्ण मीटिंगों में उठते रहे हैं, प्रदेश में भजनलाल सरकार के गठन के बाद जो नया मास्टर प्लान आया है इसकी रूपरेखा तैयार करवाने में झाबर सिंह खर्रा की बड़ी भूमिका रही है, आबादी तेजी से बढ़ रही है, हर शहर में नई-नई कालोनियां बन रही है इसलिए आने वाले कई सालों की आबादी को पहले से ही ध्यान में रखकर वर्तमान में प्रदेश के सभी शहर की बसावट का प्लान और रूपरेखा बनाना बहुत जरूरी है इसीलिए नए मास्टर प्लान के तहत प्रत्येक शहर के नियोजित विकास और विस्तार की प्रक्रिया अपनी जाएगी जिसमें पर्यावरण, संतुलन, जलवायु संतुलन, वर्षा जल संरक्षण, वृक्षारोपण इत्यादि सभी महत्वपूर्ण विषयों को ध्यान में रखकर शहर की बसावट के जाने की प्लानिंग है इसके अलावा स्मार्ट सिटी परियोजना का भी बेहतर तरीके से प्रबंधन करके जयपुर, अजमेर, कोटा, उदयपुर शहर को नया लुक देने में अपनी अग्रणी भूमिका निभा रही है, इन सभी शहरों में स्मार्ट सिटी परियोजना के तहत बड़ी संख्या में नए-नए विकास कार्य संपादित किया जा रहे हैं, इन सब कामों पर झाबर सिंह खर्रा अपनी निगाहें जमाए हुए हैं और हर विकास कार्य की प्रगति का अपडेट लेते रहते हैं विकास कार्यों में किसी भी तरह की कोई गड़बड़ी न हो और ईमानदारी से काम करने के लिए अधिकारियों और कर्मचारियों को मंत्री होने के नाते झाबर सिंह खर्रा प्रेरित करते रहते हैं, तमाम तरह के विकास कार्यों में प्रयुक्त की जाने वाली निर्माण सामग्री की गुणवत्ता के संबंध में किसी भी तरह का कोई समझौता न हो इस बात के लिए भी झाबर सिंह खर्रा संबंधित अधिकारियों को कड़े निर्देश दिए हैं। स्मार्ट सिटी परियोजना के तहत करोड़ों रुपए का बजट आवंटित किया गया है इसलिए एक-एक पैसे का सदुपयोग हो इस बात के लिए यूडीएच मंत्री विभिन्न परियोजना की नियमित रूप से अपडेट लेकर अपनी ओर से आवश्यक दिशा निर्देश भी दे रहे हैं।

राष्ट्रीयता, राष्ट्रवाद जैसे विषयों पर छात्र जीवन से ही अटल रहे हैं खर्रा

छात्र जीवन से ही देशभक्ति, राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद जैसे विषयों को लेकर झाबर सिंह खर्रा काफी गंभीर और सजग रहे हैं, इनके पिता हरलाल सिंह खर्रा राष्ट्रवाद और राष्ट्रीयता के लिए हमेशा समर्पित रहे, बचपन से ही झाबर सिंह खर्रा ने अपने पिता को राष्ट्र के लिए पूरी तरह से समर्पित देखा तो उनके दिल में भी राष्ट्रीयता और राष्ट्रवाद की भावना बचपन में ही दिल में समा गई थी जो आज तक उनके दिल में बसी हुई है, वैसे भी भारतीय जनता पार्टी में राष्ट्रीयता, राष्ट्रवाद और हिंदुत्व विषय हमेशा केंद्र बिंदु रहे हैं इसलिए देश के प्रति मर मिटने की भावना अपने कॉलेज और यूनिवर्सिटी के जमाने से ही झाबर सिंह खर्रा के दिल में समा गई थी और वर्तमान में भी झाबर सिंह खर्रा देश सेवा और समाज सेवा को पहली प्राथमिकता देते हैं, मंत्री बनने के बाद भी सामाजिक सरोकारों के कामों में खुद को शामिल करते हैं, जरूरतमंद लोगों की सेवा करना और निर्धन तथा कमजोर लोगों की मदद करना खर्रा की दैनिक दिनचर्या का हिस्सा बन चुकी है उनकी यही खासियत उन्हें अन्य नेताओं से अलग बनाए हुए हैं।

राजस्थान भाजपा में जाट समाज के माने जाते हैं बड़े लीडर

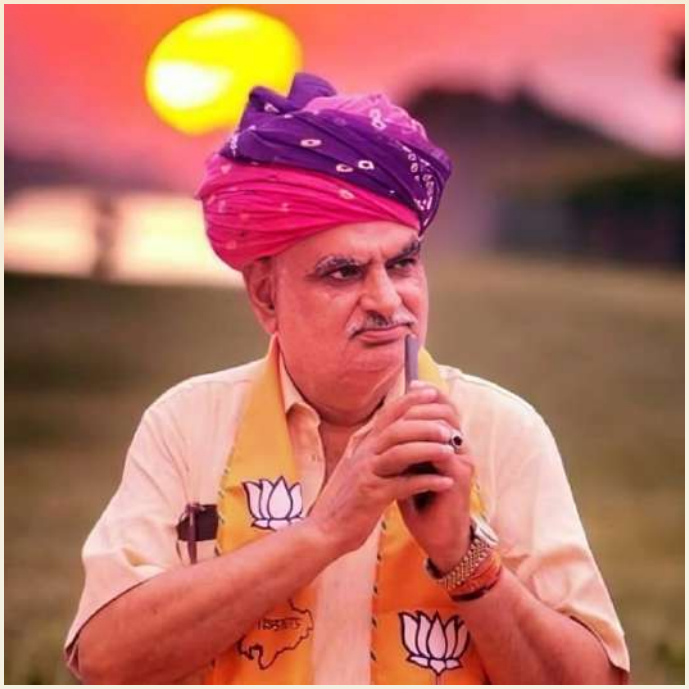

झाबरसिंह खर्रा पहली बार 2013 में श्रीमाधोपुर से विधायक चुने गए थे बाद में 2018 के विधानसभा के चुनाव में उन्हें कांग्रेस के प्रत्याशी दीपेंद्र सिंह शेखावत ने हराया लेकिन 2023 के विधानसभा चुनाव में उन्होंने दीपेंद्र सिंह शेखावत को ही हराकर दूसरी बार श्रीमाधोपुर से विधायक चुने गए लेकिन विधायक चुने जाने से पहले झाबर सिंह खर्रा श्रीमाधोपुर पंचायत समिति के प्रधान भी रह चुके हैं और सीकर जिला भाजपा के अध्यक्ष पद पर भी रहे हैं इसलिए झाबर सिंह खर्रा की राजनीति श्रीमाधोपुर तक की सीमित नहीं रही है बल्कि सीकर और पूरे शेखावाटी अंचल के बड़े जाट नेताओं में अपना अच्छा प्रभाव रखते हैं जैसा हरलाल सिंह खर्रा का शेखावाटी अंचल में मान सम्मान रहता था ठीक उसी तरह से उन्होंने शेखावाटी अंचल में अपने पिता की तरह न केवल राजनीति में प्रभाव बनाया हुआ है बल्कि शेखावाटी के लोगों में भी अपनी अच्छी पहचान बनाई हुई है, भाजपा के जाट नेताओं में झाबर सिंह खर्रा अग्रिम पंक्ति के नेता माने जाते हैं, सीकर जिला भाजपा अध्यक्ष पद पर रहते हुए भी उन्होंने पार्टी के संगठन को मजबूती दिलाने में अपनी अहम भूमिका निभाई और पार्टी के छोटे-बड़े सभी नेताओं को अपने साथ जोड़ रखा तथा निचले स्तर पर पूरे सीकर जिले में पार्टी का विस्तार करने में अपने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई इसलिए शेखावाटी अंचल के भाजपा नेताओं में झाबर सिंह खर्रा प्रमुख नेता माने जाते हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि शेखावाटी अंचल में भाजपा की तुलना में कांग्रेस पार्टी में शुरू से ही बड़े-बड़े जाट नेताओं की उपस्थिति रही लेकिन इन बड़े कांग्रेसी जाट नेताओं के बीच जिस तरह से पहले हरलाल सिंह खर्रा ने दबंग राजनीति की वैसे ही अब झाबर सिंह खर्रा दबंग राजनीति के लिए माने जाते हैं कह सकते हैं कि शेखावाटी क्षेत्र में कांग्रेस के बड़े जाट नेताओं की उपस्थिति भी झाबर सिंह खर्रा की राजनीति को कमजोर नहीं कर पा रही जो एक बड़ी बात है।

नगरीय विकास विभाग और इससे जुड़े विभागों में डिजिटल सिस्टम को शानदार तरीके से संपादित में बड़ी भूमिका रही है इनाबरसिंह खर्रा की

विगत कई सालों से नगरीय विकास विभाग की कार्य शैली और व्यवहार को लेकर कई तरह के सवाल खड़े होते रहे हैं, राजस्थान अवसान मंडल, जयपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर विकास प्राधिकरण, अजमेर विकास प्राधिकरण, नगर निकाय, नगर परिषद, नगर निगम इन तमाम संस्थाओं में नियुक्त अधिकारियों और कर्मचारियों की कार्यशैली और व्यवहार पर लोग नियमित रूप से उंगली उठाते रहे हैं कहीं पर भ्रष्टाचार की शिकायतें तो कहीं पर पत्रावलियों का सही समय पर निपटारा नहीं होना इस तरह की शिकायत हमेशा बनी हुई थी जिसकी वजह से प्रदेश में किसी भी पार्टी की सरकार रही हो सरकारों को हमेशा बदनामी झेलनी पड़ी इसलिए प्रदेश में नगरीय विकास विभाग की जिम्मेदारी हाथ में लेने के बाद झाबर सिंह खर्रा ने नगर निकाय विभाग और नगर निकाय विभाग से संबंधित तमाम विभागों में डिजिटल सिस्टम को मजबूती से लागू करने पर पूरा फोकस किया, इन सभी विभागों में ऑनलाइन काम की प्रक्रिया को बेहतर तरीके से संपादित करवाने में खर्रा की बड़ी भूमिका मानी जा रही है क्योंकि सरकारी सभी विभागों में ऑनलाइन काम की प्रक्रिया की मांग विधायक रहने के दौरान खर्रा ने उठाई थी वर्ष 2013 में जब झाबर सिंह खर्रा पहली बार श्रीमाधोपुर से विधायक बने तब भी उन्होंने सरकार के सभी विभागों में डिजिटल काम की प्रक्रिया अपने पर जोर दिया था और मंत्री बनने के बाद उन्होंने डिजिटल पद्धति से नगरीय विकास विभाग में काम करने की प्रक्रिया को पहली प्राथमिकता दी जिसकी वजह से अब पहले की तरह नगरीय विकास विभाग में शिकायतों का अंबार देखने को नहीं मिलता ऑनलाइन प्रक्रिया से कार्य होने से फाइलों का निपटारा भी समय पर हो रहा है तथा फाइलों के कामकाज में भी पारदर्शिता देखने को मिल रही है जिसकी वजह से अधिकारियों कर्मचारियों की कार्यशाली पर अब लोग पहले की तरह सवाल भी खड़े नहीं करते इसलिए नगरीय विकास विभाग में डिजिटल तरीके से काम करने की प्रक्रिया से लोग काफी खुश और संतुष्ट हैं।

"पहले संगठन में भजनलाल के 'जिगरी' थे अब सरकार में मंत्री के रूप में निभा रहे अग्रणी भूमिका, वन और पर्यावरण विभाग का कर रहे हैं श्रेष्ठ निर्देशन, पेड़ लगाने में राजस्थान में रचा इतिहास, मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री दोनों के भरोसे पर खरे उतरे संजय शर्मा"

भजनलाल सरकार में वीआईपी कल्चर का त्याग करने वाले पहले मंत्री 'संजय शर्मा'

जयपुर। प्रदेश की भजनलाल सरकार के मंत्रिमंडल में एक सदस्य ऐसे भी हैं जो बाहर से दिखने में जितने सीधे-साधे हैं उतने ही दिल के कोमल है, जिन्हें न तो मौत की परवाह और ना ही मंत्री होने का गुरूर रखते हैं, पार्टी के संगठन के मामलों में जितनी उन्हें कुशलता है उतना ही प्रशासनिक कामों के श्रेष्ठ प्रबंधन में भी माहिर है, जो बोलते कम है और काम ज्यादा करते हैं, जो संगठन में पहले भजनलाल शर्मा के साथ लंबे समय तक काम कर चुके हैं वे अब भजनलाल शर्मा के साथ कंधे से कंधा मिलाकर प्रदेश के लोगों की भलाई करने के साथ-साथ प्रदेश के सर्वांगीण विकास में अपनी बड़ी भूमिका निभाते नजर आ रहे हैं, जी हां बात कर रहे हैं। अलवर के विधायक संजय शर्मा जो वर्तमान में प्रदेश के वन पर्यावरण विभाग की जिम्मेवारी संभाले हुए हैं और उनके निर्देशन में प्रदेश के वन विभाग में पूरे देश में पेड़ लगाने में नया इतिहास रच दिया है। चाहे हरियालो राजस्थान हो या फिर एक पेड़ मां के नाम कार्यक्रम हर कार्यक्रम में राजस्थान में पूरे देश में श्रेष्ठ प्रबंधन करके प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय वन मंत्रालय दोनों का दिल जीत लिया है।

मंत्री बनने के कुछ ही दिनों बाद सरकारी गाड़ी और सुरक्षा दोनों सरकार को लौटाया वापस, वीआईपी कल्चर भी नहीं पसंद है

वन मंत्री संजय शर्मा के बारे में यह पहले से ही स्पष्ट है कि उन्हें वीआईपी कल्चर शुरू से ही पसंद नहीं है, किसी भी क्षण लोगों से मिलना उनकी आदत रही है और मंत्री बनने के बाद भी हर किसी से जैसे पहले सहज भाव से मिला करते थे वैसा ही अब लोगों से मिलते हैं, जैसे पहले मुस्कुराते हुए अमीर गरीब सभी का अपने घर पर स्वागत किया करते थे वैसे ही मंत्री बनने के बाद भी उनकी लाइफ स्टाइल में बिल्कुल भी बदलाव नहीं आया यहां तक की मंत्री बनने के कुछ दिन बाद ही उन्होंने सुरक्षा गार्ड और सरकारी गाड़ी दोनों को वापस सरकार को लौटा दिया और कहा कि जब जनता ने उन्हें चुना है तो फिर डर किस बात का, संजय शर्मा अलवर भाजपा के काफी प्रतिष्ठित और लोकप्रिय नेता माने जाते हैं क्योंकि लंबे समय तक उन्होंने अलवर भाजपा में संगठन का काम भी देखा है इसलिए चाहे प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार रही हो या फिर कांग्रेस पार्टी की विगत कई सालों से उनके आवास पर लोगों की भीड़ हमेशा नजर आई है उसका कारण संजय शर्मा की व्यक्तित्व को ही माना जा सकता है क्योंकि उनमें राजनेता वाला घमंड बिल्कुल भी नहीं है विधायक और मंत्री नहीं बनने से पहले जैसा उनका स्वभाव और व्यवहार था वैसा ही स्वभाव और व्यवहार मंत्री बनने के बाद भी है, संजय शर्मा की गिनती भाजपा के मिलनसार, सीधे, प्रखर वक्ता और स्पष्टवादिता वाले नेताओं में होती है यही वजह है कि उनकी अलवर शहर में ही नहीं बल्कि प्रदेश भाजपा में भी बहुत अच्छी लोकप्रियता है।

संगठन में भजनलाल शर्मा के साथ पहले लंबे समय तक कर चुके हैं

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के साथ पूर्व में लंबे समय तक भाजपा के संगठन में संजय शर्मा काम कर चुके हैं, जब भजन लाल शर्मा भरतपुर भाजपा जिला अध्यक्ष थे उस समय संजय शर्मा भी अलवर भाजपा के अध्यक्ष पद पर नियुक्त थे उस समय भी भजन लाल शर्मा और संजय शर्मा के बीच बहुत अच्छे व्यक्तिगत और राजनीतिक तालुका थे। वे संबंध अब तक बरकरार हैं, भजनलाल शर्मा 20 साल तक प्रदेश भाजपा के संगठन में बड़े पद पर रहे प्रदेश भाजपा के महामंत्री पद पर विराजमान रहे और जयपुर स्थित प्रदेश भाजपा के कार्यालय में नियमित रूप से बैठकर प्रदेश भर के भाजपा के कार्यकर्ताओं और नेताओं से पार्टी को मजबूती देने के लिए हमेशा मंथन किया करते थे, संजय शर्मा भी प्रदेश भाजपा के मंत्री रहे हैं इसलिए भजनलाल और संजय शर्मा दोनों एक दूसरे के स्वभाव, कार्यशाली से अच्छी तरह से वाकिफ है भजन लाल शर्मा यह पहले से ही जानते थे कि संजय शर्मा पर्यावरण को लेकर हमेशा सजग और गंभीर रहे हैं, इसीलिए भजन लाल शर्मा ने उन्हें वन विभाग की जिम्मेदारी दी उसे जिम्मेदारी को संजय शर्मा बहुत ही शानदार तरीके से निभा भी रहे हैं।

भजनलाल सरकार के श्रेष्ठ मंत्रियों की सूची में अग्रिम पक्ति में है संजय शर्मा

वन, पर्यावरण जलवायु मंत्री के रूप में अब तक भजनलाल शर्मा ने अपने विभाग का बहुत ही शानदार तरीके से प्रबंध किया है उसी का नतीजा है कि नई पेड़ लगाने के मामले में राजस्थान में पूरे देश में नया इतिहास रचा है पिछले साल राजस्थान सरकार ने 7 करोड़ नए पेड़ लगाने का लक्ष्य रखा था लेकिन यह संजय शर्मा की कुशल प्रबंधन का ही नतीजा है कि प्रदेश में 7 करोड़ से ज्यादा 7 करोड़ 35 लाख नए पेड़ लगाए गए इसी तरह से इस बार भी एक पेड़ मां के नाम कार्यक्रम के तहत प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने 10 करोड़ नए पेड़ लगाने का लक्ष्य रखा है पिछले दिनों जब पूरे प्रदेश भर में वन महोत्सव कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया था उस दिन एक ही दिन में ढाई करोड़ पेड़ पूरे प्रदेश भर में लगाकर राजस्थान ने फिर से नया इतिहास डाला। सीकर में जब वन महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा था उसमें मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने वन मंत्री संजय शर्मा की खूब तारीफ की और कहा कि चाहे हरियालो राजस्थान हो या फिर एक पेड़ मां के नाम कार्यक्रम इन तमाम कार्यक्रमों में संजय शर्मा ने वन विभाग का कुशल प्रबंधन किया जिसकी वजह से लक्ष्य से भी ज्यादा पेड़ राजस्थान में लग पाए, वन और पर्यावरण विभाग के कामों को लेकर खुद मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा काफी प्रभावित और खुश हैं, मुख्यमंत्री ने जो टारगेट अब तक वन विभाग को दिए उन सभी टारगेट को विभाग की ओर से पूरा भी किया गया इतना ही नहीं नए पेड़ लगाने के साथ पेड़ों की सुरक्षा को लेकर भी संजय शर्मा ने वन विभाग के छोटे-बड़े सभी अधिकारियों को कर्मचारियों को पूरी तरह से पाबंदी किया गया है और अगर नए पेड़ों की सुरक्षा में कोई लापरवाही और काम चोरी करता है तो फिर दोषी अधिकारी और कर्मचारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने में भी संजय शर्मा पीछे नहीं रहते, वन विभाग के छोटे बड़े सभी अधिकारी प्रदेश में हरियाली को बढ़ावा देने के प्रयासों में युद्ध स्तर पर जुटे हुए हैं और इन अधिकारियों और कर्मचारियों को संजय शर्मा नियमित रूप से वनों की सुरक्षा और नए पेड़ लगाने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

दूसरी बार चुने गए विधायक, वर्ष 2018 में भी कांग्रेस की श्वेता शर्मा को हराया था

संजय शर्मा अलवर से दूसरी बार विधायक चुने गए हैं इससे पहले वर्ष 2018 में उन्होंने इसी सीट से चुनाव लड़ा था और कांग्रेस पार्टी की श्वेता शर्मा को बड़े मतों के अंतर से हराया था, हालांकि 2018 में कांग्रेस पार्टी को बहुमत मिला। इसलिए भारतीय जनता पार्टी की सरकार नहीं बन पाई थी लेकिन विपक्ष में रहने के दौरान भी संजय शर्मा ने अलवर की समस्याओं को और मुद्दों को शानदार तरीके से विधानसभा में उठाया और अलवर के विकास को गति देने में अपनी ओर से कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी उसी का नतीजा है कि अलवर की जनता ने वर्ष 2023 के विधानसभा चुनाव में भी उन्हें चुना और अब जिस तरह से इस बार उन्हें मंत्री बनने का गौरव हासिल हुआ है उसके बाद तो अलवर के लोगों को ऐसा लग रहा है जैसे उनकी लॉटरी खुल गई हो। वर्ष 2023 के विधानसभा चुनाव में संजय शर्मा ने कांग्रेस के अजय अग्रवाल को हराया था।

ग्रीन बजट की रूपरेखा तैयार करवाने में संजय शर्मा की भी रही बड़ी भूमिका

प्रदेश की भजनलाल सरकार ने इस बार बजट में ग्रीन बजट का भी प्रावधान किया है जो अपने आप में एक बहुत बड़ी बात है, इस ग्रीन बजट की रूपरेखा तैयार करवाने में संजय शर्मा की भी बहुत बड़ी भूमिका रही है क्योंकि संजय शर्मा प्रकृति प्रेमी और पर्यावरण सुरक्षा के लिए पिछले कई सालों से काम कर रहे हैं इसलिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के ग्रीन बजट की परिकल्पना को मजबूती देने में संजय शर्मा का भी काफी योगदान रहा उसी का नतीजा रहा है कि प्रदेश में ग्रीन बजट आवंटित किया गया और अभी स्क्रीन बजट के माध्यम से पूरे आवंटित किया गया और ग्रीन बजट के आधार पर ही पूरे प्रदेश में नए पेड़ लगाने का सिलसिला युद्ध स्तर पर जारी है। इसके लिए बाकायदा वन विभाग ने संयोजित तरीके से जिलेवार, पंचायत समिति पंचायत स्तर पर पेड़ लगाने की एक विस्तृत रूपरेखा तैयार की और अब इस रूपरेखा के आधार पर प्रदेश भर में पेड़ लगाए जा रहे हैं। इस कार्य मे जनप्रतिनिधियों के अलावा स्वयंसेवी संगठनों व्यापारिक संगठनों कर्मचारी संगठनों इत्यादि सभी का सहयोग भी लिया जा रहा है, जन सहभागिता के माध्यम से सरकार ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाने की दिशा में काम कर रही है और इस काम में वन विभाग को सफलता भी मिल रही है उसी का नतीजा है कि पेड़ लगाने में राजस्थान अन्य राज्यों की तुलना में काफी आगे है।

संजय शर्मा अलवर शहर के पहले भाजपा विधायक जो मंत्री बने

जानकारी के अनुसार प्रदेश की भजनलाल सरकार में मंत्री बने संजय शर्मा अलवर शहर के पहले भाजपा विधायक हैं जो मंत्री बनने में कामयाब रहे हालांकि से पहले बनवारी लाल दो बार विधायक रहे लेकिन उन्हें प्रदेश में भाजपा की सरकार के गठन होने के बाद भी मंत्रिमंडल में जगह नहीं मिली थी लेकिन संजय शर्मा को भजनलाल सरकार ने मंत्री बनने का गौरव मिला इसकी वजह से अलवर शहर के लोग भी खुद को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं और उन्हें ऐसा लग रहा है कि उन्हें के परिवार का एक सदस्य राज्य मंत्रिमंडल में बैठा हुआ है जो अपने आप में बड़ी बात है। क्योंकि अब से पहले अलवर शहर के भाजपा विधायक को मंत्री बनने का मौका नहीं मिला था, जानकारी के अनुसार भजनलाल शर्मा के मुख्यमंत्री बनने के बाद से ही अलवर शहर के लोगों को यह लगने लगा था कि इस बार संजय शर्मा को मंत्रिमंडल में जगह जरूर मिलेगी क्योंकि संजय शर्मा के अच्छे व्यवहार और उनके अनुभव के बारे में भजनलाल शर्मा बहुत पहले से ही जानते थे इसलिए लोगों को उम्मीद थी कि भजन लाल शर्मा संजय शर्मा के अनुभवों का फायदा जरुर उठाएंगे और यह बात सच भी साबित थी। जब भजन लाल शर्मा ने संजय शर्मा को अपनी टीम का अहम हिस्सा बनाया और संजय शर्मा की रुचि के अनुसार ही उन्हें विभाग भी दिया।

स्वच्छ पर्यावरण और बरसात के लिए हरा भरा राजस्थान बेहद जरूरी

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और वन मंत्री संजय शर्मा दोनों यह जानते हैं कि अगर प्रदेश में ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाए जाएंगे और प्रदेश में ज्यादा से ज्यादा हरियाली होगी तो एक तरफ जहां प्रदेश में बरसात अच्छी होगी तो दूसरी तरफ स्वच्छ पर्यावरण का माहौल भी बनेगा जिसकी वजह से लोगों की सेहत भी अच्छी रहेगी और स्वच्छ वातावरण और पर्यावरण में देश और विदेश के उद्योगपति भी यहां ज्यादा से ज्यादा निवेश कर सकेंगे इसलिए इसी सोच के आधार पर ग्रीन बजट की परिकल्पना तैयार की गई और ग्रीन बजट की परिकल्पना के आधार पर ही प्रदेश में नए पेड़ पिछले साल से ही लगाये जा रहे हैं जिसकी वजह से राजस्थान में अब चारों तरफ हरियाली देखने को मिल रही है यहां तक की मरुस्थल जिलों में भी हरियाली का आलम देखने को मिल रहा है यही वजह है कि पिछले साल भी राजस्थान में ज्यादा पेड़ लगाने की वजह से बरसात अच्छी हुई और इस बार भी राजस्थान में अच्छी बरसात हो रही है तथा चारों तरफ हरियाली का माहौल होने से स्वच्छ पर्यावरण की दिशा में भी राजस्थान तेजी से आगे बढ़ रहा है।

संगठन का बहुत लंबा अनुभव है संजय शर्मा के पास, अलवर भाजपा के तीन बार अध्यक्ष और प्रदेश भाजपा में मंत्री भी रहे

भाजपा के संगठन को गति देने में और मजबूती प्रदान करने में संजय शर्मा की बड़ी भूमिका रही है खासतौर से अलवर भाजपा में पार्टी के संगठन को निचले स्तर पर मजबूत करने के लिए शर्मा ने कई बड़े अपने स्तर पर नवाचार किए थे। इसकी वजह से अलवर में भाजपा का विस्तार तेजी से हुआ, वर्ष 2003 और 2008 में संजय शर्मा अलवर भाजपा के अध्यक्ष रहे इसके अलावा 2019 में भी कुछ समय के लिए संजय शर्मा अलवर भाजपा के अध्यक्ष रहे तथा प्रदेश भाजपा में भी मंत्री पद पर नियुक्ति के दौरान संजय शर्मा ने काफी अच्छा काम किया था, इसी वजह से प्रदेश भाजपा के सभी बड़े नेताओं में संजय शर्मा की अच्छी छवि बनी हुई है और हमेशा गुटबाजी से दूर रहते हुए संजय शर्मा ने पार्टी की सेवा की, शर्मा के पार्टी के संगठन में किए गए अच्छे कामों की वजह से ही उन्हें पहले 2018 में पार्टी ने टिकट दिया। वैसे तो संजय शर्मा पार्टी के सभी बड़े नेताओं का समान तौर पर आधार और सम्मान करते हैं लेकिन फिर भी केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव और ओम माथुर से संजय शर्मा की काफी नजदीकी है लेकिन मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से भी संजय शर्मा के राजनीतिक और व्यक्तिगत दोनों रिश्ते काफी अच्छे हैं।

राइजिंग राजस्थान के समझौता के क्रियान्वयन में भी हरा भरा राजस्थान निभाएगा बड़ी भूमिका

जानकार लोगों का कहना है कि प्रदेश के भजनलाल सरकार की अगुवाई में जिस तरह से प्रदेश में बड़ी संख्या में पेड़ लगाकर प्रदेश की काया को पलटा जा रहा है चारों ओर हरियाली का सुनहरा दृश्य देखने को मिल रहा है उसकी वजह से पर्यावरण अच्छा हो ही रहा है जो देश और विदेश के उद्योगपतियों को यहां पर औद्योगिक इकाई की स्थापना के लिए प्रेरित भी कर रहा है इसलिए कहा जा रहा है कि राइजिंग राजस्थान में बड़े स्तर पर जो समझौते हुए हैं। उन समझौते के क्रियान्वयन में हरा-भरा राजस्थान उद्योगपतियों को यहां उद्योग लगाने के लिए और भी विवश करेगा की वजह से जो समझौते राइजिंग राजस्थान में हुए हैं उन समझौते के सफल क्रियान्वयन में हरा भरा राजस्थान बड़ी भूमिका निभा सकता है और इस काम में भजनलाल सरकार को सफलता भी मिल रही है, जानकार लोगों का कहना है कि प्रदेश में नई औद्योगिक इकाइयां लगाने वाले उद्योग मालिकों को औद्योगिक इकाई के परिसर में बड़े स्तर पर पेड़ लगाने के लिए भी सरकार की ओर से कहा जा रहा है ताकि नए उद्योग के शुरू होने पर आसपास के इलाके में पर्यावरण स्वच्छ बना रहे कुल मिलाकर हरा भरा राजस्थान प्रदेश की जनता के लिए वरदान बन गया है और यह सब हुआ है। प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और वन मंत्री संजय शर्मा के संयुक्त प्रयासों से।

भजनलाल को 'भागीरथ' बनाने में कन्हैयालाल का बड़ा योगदान

पिछले 19 माह में पानी के क्षेत्र में भजनलाल सरकार ने किया सबसे ज्यादा काम, पीएम नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के भरोसे पर मंत्री के तौर पर खरे उतर रहे कन्हैया लाल चौधरी, विकट परिस्थितियों और कठिन हालातो में भी गर्मी में पानी को लेकर कहीं भी नहीं मचा हाहाकार

जयपुर। पिछले 19 माह में प्रदेश की भजनलाल सरकार ने पानी के क्षेत्र में सबसे ज्यादा उल्लेखनीय काम किए हैं, पानी को लेकर कई बड़े निर्णय लिए गए और कई बड़ी योजनाएं शुरू की गई है इसलिए प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को 'भागीरथ' की उपाधि भी लोगों ने दे दी है लेकिन बड़ी बात यह है मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को 'भागीरथ' की जो यह उपाधि मिली है उसमें सबसे ज्यादा कहीं ना कहीं बड़ी भूमिका प्रदेश के जन स्वास्थ्य अभियंत्रिक विभाग और जल संसाधन मंत्री कन्हैयालाल चौधरी की मानी जा रही है क्योंकि चौधरी ने एक तरफ अपनी कार्यशाली, विवेक, नई सोच और ईमानदारी से इस महत्वपूर्ण विभाग की जिम्मेवारी संभाली है तो दूसरी तरफ उन्होंने पिछली गहलोत सरकार में भ्रष्टाचार को लेकर बदनाम हुए इस विभाग की छवि में काफी सुधार किया है जिससे केंद्र सरकार की ओर से संचालित महत्वपूर्ण जल जीवन मिशन कार्यक्रम का क्रियान्वयन पारदर्शिता और ईमानदारी से हो रहा है जिससे काफी हद तक पीने के पानी की समस्या का निवारण भी हुआ है

हालांकि पानी के क्षेत्र में अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है लेकिन जिस रफ्तार से प्रदेश के जल संसाधन विभाग में तेजी से कम हो रहा है उसे देखते हुए उम्मीद की जा सकती है की आने वाले 2 साल में राजस्थान जैसे मरुस्थलीय प्रदेश में किसी भी जिले में ना तो पीने के पानी की कमी रहेगी और ना ही किसानों को अपने खेतों में पानी उपलब्ध करवाने के लिए पानी की कमी से परेशान होना पड़ेगा। अगर प्रदेश के भजनलाल सरकार के अब तक के कार्यकाल का विश्लेषण करें तो जानकार लोगों का भी यही कहना है कि सरकार ने हर क्षेत्र में अब तक काफी अच्छा काम किया है लेकिन जो कार्य पानी के क्षेत्र में सरकार ने किया है। ऐसा काम आज तक इतने कम समय में राजस्थान के इतिहास में कभी भी किसी पार्टी की सरकार ने नहीं किया इसलिए जल संसाधन विभाग के मंत्री के रूप में कन्हैयालाल चौधरी को 100 में से 100 मार्क्स दिए जा सकते हैं।

भजनलाल को भागीरथ बनाने में कन्हैयालाल चौधरी की बड़ी भूमिका

जल जिस रूप में, जहां कहीं भी है, रक्षा करने योग्य है

पानी की कमी सम्पूर्ण विश्व सभ्यता के लिए एक संकट है, चेतावनी है

पिछले 19 महीने प्रदेश के पानी के क्षेत्र में काफी उल्लेखनीय रहे। चाहे ईस्टर्न कैनल योजना हो, चाहे हरियाणा से जल समझौता हो, चाहे माही डैम से प्रदेश को पानी दिलाने की बात हो, चाहे श्री गंगानगर, हनुमानगढ़, बाड़मेर, जैसलमेर जैसे जिलों में नहर के माध्यम से पानी वितरण की व्यवस्था हो हर विषय में सरकार ने कई बड़े किया और फैसला ही नहीं लिए बल्कि ईस्टर्न कैनल योजना पर काम भी युद्ध स्तर पर शुरू हो गया है, इस योजना में हजारों करोड़ों रुपए के टेंडर जारी हो चुके हैं, यह योजना वसुंधरा राजे सरकार के समय से ही लंबित पड़ी हुई थी लेकिन पिछली गहलोत सरकार और केंद्र सरकार के बीच इस योजना को लेकर अच्छे माहौल में बातचीत हुई ही नहीं और केंद्र सरकार और राज्य सरकार एक दूसरे पर आरोप लगाती रही जिसकी वजह से यह योजना फाइलों में ही रही लेकिन प्रदेश में भाजपा की सरकार बनने के बाद मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सबसे पहले इसी योजना को लेकर केंद्र सरकार और मध्य प्रदेश सरकार दोनों से बातचीत की, केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव ने इस योजना के क्रियान्वयन को लेकर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का पूरा सपोर्ट किया प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पहले से ही इस योजना को लागू करने के लिए कृत संकल्प थे इसलिए पिछले कई सालों से लंबित पड़ी इस बड़ी योजना को लेकर राजस्थान सरकार का केंद्र सरकार और मध्य प्रदेश सरकार दोनों से समझौता हुआ और समझौता होने के बाद इस योजना पर युद्ध स्तर पर काम भी जारी है इसी तरह से चूरू, झुंझुनू और आसपास के अन्य जिलों को यमुना नदी का पानी मिलने के असर हो गए हैं इस मामले को लेकर भी राजस्थान सरकार का हरियाणा से समझौता हो गया है इस कार्य के लिए डीपीआर तैयार की जा रही है प्रदेश के बांगड़ क्षेत्र के जिलों में माही डैम से पानी उपलब्ध करवाने के बारे में सरकार की ओर से तैयारी की जा रही है, प्रदेश के श्रीगंगानगर जैसलमेर जोधपुर बाड़मेर, हनुमानगढ़ जिलों में नहर से पानी की व्यवस्था को मजबूत किया जा रहा है, इस तरह से कह सकते हैं कि प्रदेश के पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण सभी दिशाओं में लोगों को पीने का पानी और किसानों को उनके खेतों में पानी पहुंचाने के लिए सरकार ने भविष्य को ध्यान में रखकर कई बड़े फैसले लिए जिन पर युद्ध स्तर पर काम जारी है इसके अलावा गर्मियों में किसी भी जिले में पानी की किल्लत न हो इसके लिए अस्थाई तौर पर पानी की व्यवस्था करने के लिए जिला कलेक्टर और जल संसाधन विभाग के जिलों से जुड़े अधिकारियों को निर्देशित किया गया है, इसके लिए नए ट्यूबवेल, हेड पंप स्थापित करने के लिए बजट जारी किया गया है, जल जीवन मिशन के तहत हर घर में पानी पहुंचाने के लिए पानी के स्रोत विकसित किए गए हैं जिनके माध्यम से हर घर में पानी पहुंचाने की व्यवस्था में जल संसाधन विभाग तत्परता से सभी प्रयास कर रहा है, यह सारे कार्य साफ नजर आ रहे हैं इसीलिए लोग कह रहे हैं की पानी के क्षेत्र में भजनलाल सरकार ने अब तक सबसे ज्यादा काम किया है और इसी वजह से भजनलाल को भागीरथ कहा गया है लेकिन यह भी सत्य है कि भजनलाल को भागीरथ बनाने में जल संसाधन मंत्री कन्हैयालाल चौधरी की बड़ी भूमिका रही क्योंकि जल संसाधन विभाग से जुड़े सभी छोटे-बड़े कार्यों की कागजी प्रक्रिया को पारदर्शिता से तेजी से निपटना और उन्हें मुख्यमंत्री की टेबल तक पहुंचाना, यह अपने आप में बड़ा काम है और इस काम में मंत्री के तौर पर चौधरी ने भजनलाल का पूरा साथ दिया केंद्र सरकार और राज्य सरकार की ओर से संचालित की जाने वाली विभिन्न परियोजनाओं की कार्य प्रगति को नियमित रूप से मुख्यमंत्री की टेबल तक पहुंचाना और उन्हें लगातार योजनाओं के बारे में अपडेट देते रहना इन सबसे मुख्यमंत्री का काम काफी आसान हुआ और उन्होंने जल संसाधन विभाग से मिले फीडबैक और सुझावों के आधार पर केंद्र सरकार के समक्ष मजबूती से पानी को लेकर राजस्थान का पक्ष रखा जिसके अच्छे नतीजे भी सामने आए, इसीलिए हर कोई यह कहता है नजर आ रहा है कि भजनलाल को भागीरथ बनाने में चौधरी की भूमिका को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता।

पिछली सरकार में बदनाम हुए जल संसाधन विभाग की छवि को काफी हद तक सुधार दिया है चौधरी ने

राम जल सेतु लिंक परियोजना

राजस्थान मध्यप्रदेश

(संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चम्बल लिंक परियोजना)

12 हज़ार करोड़ रुपए के कार्यों के कार्यादेश

पिछली गहलोत सरकार में जल जीवन मिशन कार्यक्रम में राजस्थान में बड़े स्तर पर हुए भ्रष्टाचार के मामले से एक तरफ जहां जल संसाधन विभाग की छवि काफी खराब हुई तो दूसरी तरफ राजस्थान सरकार की छवि भी पूरे देश में खराब हुई थी, जल जीवन मिशन में बड़े स्तर पर हुए घोटाले के मामले में कई बड़े लोगों की गिरफ्तारी भी हुई है जांच एजेंसी की ओर से अभी भी जांच जारी है इस मामले में तत्कालीन जल संसाधन मंत्री गिरफ्तार भी किए गए और यह मामला प्रदेश के लोगों में अब भी चर्चा का विषय बना हुआ है हालांकि प्रदेश में अब भारतीय जनता पार्टी की सरकार का गठन हो गया है और इस विभाग के नए मंत्री कन्हैयालाल चौधरी ने कुशल प्रबंधन से काफी हद तक इसी विभाग कीकार्यशैली में काफी सुधार किया है और जल संसाधन विभाग की और से संचालित छोटे बड़े सभी कार्यों की प्रगति रिपोर्ट को मंत्री चौधरी नियमित रूप से देखते रहते हैं और अधिकारियों और कर्मचारियों को पारदर्शिता और ईमानदारी से काम करने के लिए प्रेरित भी करते रहते हैं और विभाग की टेंडर प्रक्रिया पर भी नजरे जमाए रखते हैं जिसकी वजह से काफी हद तक इस विभाग की कार्यशैली में बदलाव आया है, जल जीवन मिशन के कार्यक्रम के तहत भी बेहतर तरीके से ईमानदारी से कार्य संपादित हो रहे हैं तथा राजस्थान सरकार की ओर से भी संचालित की जा रही विभिन्न परियोजनाओं के कार्यों की प्रगति रिपोर्ट की भी मंत्री चौधरी नियमित रूप से समीक्षा करते रहते हैं जिसकी वजह से विभाग में तैनात छोटे-बड़े सभी कर्मचारी और अधिकारियों की कार्यशैली में नयापन और बदलाव आया है जिसकी वजह से विभाग के कामों में भारी बदलाव साफ नजर आ रहा है इसलिए कह सकते हैं कि पिछली गहलोत सरकार में बदनाम हो चुका जल संसाधन विभाग अब अपनी छवि को काफी सुधर चुका है, यह बड़ा कमाल हुआ है जल संसाधन मंत्री कन्हैयालाल चौधरी के श्रेष्ठ प्रबंधन से।

अपने निर्वाचन क्षेत्र में कन्हैयालाल चौधरी है काफी लोकप्रिय, इसीलिए जीत की मनाई हैट्रिक

वर्ष 2013 से कन्हैया लाल चौधरी टोंक जिले की मालपुरा टोडारायसिंह विधानसभा सीट से नियमित रूप से विधायक चुनते आ रहे हैं वर्ष 2023 के विधानसभा चुनाव में उन्होंने करीब 16000 से ज्यादा वोटो से कांग्रेस प्रत्याशी को हराया था, यह उनके इलाके के लोगों में लोकप्रियता का ही परिणाम है कि उन्होंने लगातार जीत की हैट्रिक मनाई, चौधरी के बारे में कहा जाता है कि भले ही वह जाट समाज से ताल्लुक रखते हो लेकिन हर जाति और बिरादरी के लोगों के बीच उनकी बहुत अच्छी छवि है हर जाति और बिरादरी के लोगों से आम नागरिक की तरह अब से नहीं बहुत पहले से मिलते रहे हैं जब विधायक नहीं चुने गए थे तब भी हमेशा लोगों के बीच में रहे और लोगों के सुख-दुख में खुद की भागीदारी निभाते रहे और भजनलाल सरकार में मंत्री बनने के बाद भी उनके व्यवहार और कार्यशैली में बिल्कुल भी बदलाव नहीं आया है उन्होंने हमेशा अपने घर के दरवाजे लोगों के लिए खुले रखे हैं चाहे जयपुर में सरकारी आवास हो या फिर खुद के निर्वाचन क्षेत्र में निजी आवास हो दोनों ही जगह पर जनता से जुड़े मुद्दे और लोगों की समस्याओं को सुलझाने के लिए उन्होंने अपने स्तर पर अपना निजी स्टाफ भी रखा हुआ है जो लोगों की समस्याओं के निवारण के लिए सरकारी स्तर पर हर संभव प्रयास करते हैं यही वजह है कि वे लगातार चुनाव जीते आ रहे हैं, अब जिस तरह से उन्हें मंत्री बनाया गया इसके बाद तो उनके निर्वाचन क्षेत्र के लोगों के चेहरे काफी खिल उठे हैं।

गांव और छोटे कस्बे से जुड़े परिवारों के बच्चों को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के काम में युद्ध स्तर पर जुटे हैं चौधरी

कन्हैयालाल चौधरी खुद सिविल इंजीनियर हैं और ए ग्रेड श्रेणी के ठेकेदार भी हैं लेकिन शुरू से ही गांव और छोटे कस्बे में रहने वाले गरीब मजदूर किसान के परिवारों के बच्चों को अच्छी शिक्षा मिले इसके लिए उन्होंने अपने खुद के स्कूल की स्थापना की,यह विद्यालय अब इंटरनेशनल स्मार्ट स्कूल के नाम से जाना जाता है इस विद्यालय का काफी नाम है, स्कूल का संचालन चौधरी की पत्नी करती हैं लेकिन चौधरी की कोशिश यही है कि किसान और गरीब के बच्चों को अच्छी शिक्षा मिले इसके लिए उन्होंने अपने खुद के विद्यालय में भी गरीब और किसान मजदूर के बच्चों को अच्छी शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध करवाने के लिए स्कूल प्रबंधन को भी अपनी मंशा से अवगत करवा चुके हैं, चौधरी की ओर से एक चैरिटी संस्थान का भी संचालन किया जाता है, इसलिए चौधरी को जहां समाज सुधारक कहा जाता है तो समाजसेवी भी माना जाता है चौधरी को जहां एक कुशल और श्रेष्ठ राजनेता माना जाता है तो चौधरी को शिक्षा के क्षेत्र में अच्छा काम करने के लिए भी माना जाता है तो गरीब और किसान की जिंदगी को खुशहाल करने में भी चौधरी के प्रयासों की भी खूब प्रशंसा की जाती है।

प्रदेश के जाट समाज में रखते हैं अपना अच्छा प्रभाव

राजस्थान की राजनीति में जाट समाज का शुरू से ही प्रभाव रहा है यही वजह है कि कांग्रेस हो या बीजेपी या फिर कोई अन्य दल जाट समाज के बड़े-बड़े नेता रहे हैं हालांकि भाजपा की तुलना में कांग्रेस में जाट समाज के बड़े नेताओं की उपस्थिति ज्यादा रही लेकिन पिछले कुछ सालों से जाट समाज के कई बड़े नेता कांग्रेस छोड़कर बीजेपी में भी शामिल हुए हैं फिर भी जाट समाज का भाजपा की तुलना में कांग्रेस के प्रति ज्यादा आकर्षण रहा लेकिन भारतीय जनता पार्टी में भी जाट समाज के कई लोकप्रिय नेताओं ने कांग्रेस के जाट समाज के नेताओं को कड़ी टक्कर दी है जिसमें एक बड़ा नाम कन्हैयालाल चौधरी का भी है जो न केवल भारतीय जनता पार्टी के कर्तव्य निश्चित और समर्पित नेता माने जाते हैं बल्कि इनका जाट समाज में भी बहुत अच्छा रुतबा है जाट समाज के मंचों पर इन्हें काफी सम्मान मिलता है क्योंकि इनकी अपनी खुद की पर्सनैलिटी ही ऐसी है कि हर कोई इसे बातचीत करना पसंद करता है और इन्हें सम्मान देना पसंद करता है यही वजह है कि जाट समाज के बड़े संगठनों में अब तक बड़े पदों पर रहे हैं, जाट समाज के सामाजिक सरोकारों के कामों में भी शुरू से ही बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते रहे हैं, चौधरी इसी कोशिश में जुटे रहते हैं कि आर्थिक, राजनीतिक सामाजिक, खेल, शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान, इत्यादि सभी क्षेत्रों में जाट समाज के युवा ज्यादा से ज्यादा अपनी भागीदारी निभाएं, इसके लिए जब-जब जाट समाज की ओर से कोई कार्यक्रम किया जाता है तो वे खुलकर जाट समाज के सर्वांगीण विकास के लिए तथ्यात्मक तरीके से अपनी बातें रखते हैं और सिर्फ बात ही नहीं रखते बल्कि जाट समाज के सामाजिक सरोकारों के कामों में गहन दिलचस्पी दिखाते हैं इसी वजह से जाट समाज में इनका बड़ा नाम है।

हैदराबाद में जाट समाज के उद्यमियों को राजस्थान में उद्योग लगाने के लिए किया प्रेरित

जाट समाज में कन्हैयालाल चौधरी की पकड़ राजस्थान तक ही नहीं है बल्कि देश के अन्य राज्यों में भी जाट समाज में चौधरी का काफी अच्छा प्रभाव है, विधायक और मंत्री बनने से पहले भी चौधरी देश के अन्य राज्यों में जाट समाज के बड़े-बड़े कार्यक्रमों में और पंचायत में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाते रहे हैं पिछले दिनों तेलंगाना में हैदराबाद में रह रहे राजस्थान के जाट समाज ने चौधरी को हैदराबाद में बीएन रेड्डी नगर में निर्मित किए गए वीर तेजाजी और महादेव जी के मंदिर के शुभारंभ अवसर पर बुलाया था इस कार्यक्रम में हैदराबाद के जाट समाज से जुड़े लोगों ने चौधरी का भव्य स्वागत किया चौधरी ने हैदराबाद में रह रहे जाट समाज के लोगों को राजस्थान में नए उद्योग स्थापित करने के लिए प्रेरित किया है नए उद्योग स्थापित करने में कहीं भी कोई दिक्कत नहीं आएगी। जिस पर हैदराबाद में रह रहे जाट समाज के उद्योगपतियों ने चौधरी को भरोसा भी दिलाया कि वे इस प्रोजेक्ट के बारे में गंभीरता से विचार करेंगे।

सत्यमेव जयते

किसान और पशुपालकों में ओम पूनियां की लोकप्रियता चरम पर

सामाजिक सरोकारों के कामों में भी पूनियां की संत – महात्मा जैसी भूमिका, जयपुर डेयरी की दिशा और दिशा सुधारने में रहा अप्रत्याशित योगदान, जयपुर डेयरी के कर्मचारियों में भी है काफी लोकप्रिय

जयपुर। पिछले करीब 20 साल से जयपुर और दौसा जिले के किसानों और दुग्ध उत्पादकों के दिलों पर राज कर रहे जयपुर डेयरी के अध्यक्ष ओम प्रकाश पूनिया सामाजिक सरोकारों के कामों में भी संत महात्मा जैसी भूमिका में नजर आते हैं, डेयरी क्षेत्र में पूनिया ने अपने अनुभव, नई सोच और नवीन विचारों के माध्यम से जयपुर डेयरी की दशा और दिशा सुधारने में अप्रत्याशित योगदान दिया जिसकी वजह से उन्होंने देश के संपूर्ण डेयरी क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बनाई, वर्ष 2005 से हर 5 साल में लगातार जयपुर डेयरी के अध्यक्ष पद पर निर्वाचित होते हैं जो यह बताता है कि उनकी लोकप्रियता किसानों, पशुपालकों और जयपुर डेरी से जुड़े तमाम लोगों में किस हद तक बनी हुई है, पूनिया की लोकप्रियता किसान और पशुपालकों तक ही सीमित नहीं है बल्कि उन्होंने सामाजिक सरोकारों के कामों में पिछले कई साल से जिस तरह से अपना संपूर्ण जीवन समर्पित किया हुआ है उसे जयपुर, दोसा और आसपास के जिलों के लोगों में साधु महात्मा जैसे माने जाते हैं वैसे फुलेरा के निकट स्थित देश के विख्यात धार्मिक स्थल बंदे बालाजी प्रशासन ट्रस्ट के भी लंबे समय से अध्यक्ष पद पर विराजमान है और इस पद पर रहते हुए भी उन्होंने सामाजिक सरोकारों के कामों में अपनी ओर से कोई कसर बाकी नहीं छोड़ रखी है, गाय की रक्षा, संरक्षण, चारा, पानी दवाई आदि खर्चो के लिए पैसों की कोई कमी नहीं आने देते, गौशालाओं, धर्मशालाओं और मंदिरों के निर्माण में भी हर संभव मदद करते हैं तथा गरीब जरूरतमंद लोगों की भलाई और कल्याण के लिए भी हमेशा आगे रहे हैं, व्यापार संगठन से जुड़े लोगों से हमेशा संपर्क में रहते हैं और उन्हें धार्मिक कार्यों के लिए प्रेरित करने के अलावा गरीबों की हर संभव मदद करने के लिए भी प्रेरित करते रहते हैं जिसकी वजह से चाहे कोई गरीब हो या अमीर, चाहे कोई व्यापारी, उद्योगपति हो या मजदूर सबके लाडले बने हुए हैं, भले ही अब तक विधायक और सांसद ना बने हो लेकिन लोकप्रियता के मामले में किसी विधायक और सांसद से कम भी नहीं है, यह बात अलग है कि इतनी लोकप्रियता और दमखम रखने के बावजूद भी अभी तक किसी राजनीतिक दल की निगाहें पुनिया पर नहीं टिकी, लोगों में चर्चा यह भी है कि अगर पूनिया जयपुर जिले की किसी भी सीट से विधानसभा या लोकसभा का चुनाव लड़े तो हारने वाले नहीं है, हालांकि पूर्व में पूनिया जयपुर ग्रामीण लोकसभा सीट से चुनाव लड़ने की इच्छा प्रकट भी कर चुके हैं।

किसान और दुग्ध उत्पादकों में पुनियां की लोकप्रियता का क्या है कारण

आखिर ओम पूनिया पिछले करीब 20 साल से जयपुर डेयरी के अध्यक्ष पद पर हर बार निर्वाचित क्यों होते हैं यह एक बड़ा सवाल है जिसका सीधा सा जवाब यही सामने आता है कि वर्ष 2005 के बाद जयपुर डेयरी के अध्यक्ष पद पर निर्वाचित होने के बाद उन्होंने जयपुर और दौसा जिले के किसान और पशुपालकों के हितों की रक्षा करने और उनके कल्याण के लिए जयपुर डेयरी के माध्यम से जो काम किया, ऐसा कार्य प्रदेश में किसी अन्य डेयरी में देखने को नहीं मिला है, पूनिया हमेशा दूध की फैट का पैसा बढ़ाने में कभी भी पीछे नहीं होते और लगातार इसी कोशिश में जुटे हुए हैं कि दुग्ध उत्पादकों को ज्यादा से ज्यादा पैसा मिले जिसकी वजह से दुग्ध उत्पादक अपने परिवार की ज़रूरतें पूरा कर सकें, इसके अलावा पूनिया की हमेशा यह भी कोशिश रही की चाहे दूध उत्पादक छोटा हो या बड़ा सभी का दूध संकलन करने के लिए जयपुर डेयरी के प्रशासन को साफ निर्देशित भी किया और चाहे आरसीडीएफ प्रशासन हो या फिर राज्य सरकार से जुड़े बड़े लोग हो सभी को पुनिया यह मैसेज नियमित रूप से देते रहे कि जब तक दुग्ध उत्पादकों की सुविधाओं में विस्तार नहीं किया जाएगा तब तक सरस डेयरी के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव नहीं आ पाएगा इसलिए दुग्ध उत्पादकों को ज्यादा से ज्यादा सुविधाएं देकर ही निजी क्षेत्र में संचालित बड़ी-बड़ी डेयरी से मुकाबला किया जा सकता है, इसलिए पिछले 20 साल में ओम पूनिया दुग्ध उत्पादकों को दूध का समुचित पैसा देने के प्रयास में जुटे हुए हैं, पुनिया जानते हैं कि किसानों के पास नगद पैसों के लिए ज्यादा व्यवस्था नहीं होती किसान अपने पशुओं के दूध के पैसे मिलने के बाद ही अपनी आधारभूत जरूरत को पूरा कर पाते हैं इसलिए पशुपालकों को समुचित पैसा सही समय पर मिले इस बात का पूनिया ने हमेशा ध्यान रखा इसी वजह से प्रदेश के किसान और पशुपालकों में पुनिया काफी लोकप्रिय है इतना ही नहीं पशुपालकों को पूनिया जयपुर डेयरी के फैमिली मेंबर की तरह मानते हैं और उनके हर सुख दुख में शामिल भी होते हैं और हर तरह से मदद करने को भी तैयार रहते हैं इसीलिए पूनिया जयपुर और दोसा जिले के ग्रामीणों में काफी लोकप्रिय हैं।

बंदे बालाजी मंदिर ट्रस्ट के पिछले 20 साल से हैं अध्यक्ष

राजधानी जयपुर से करीब 45 किलोमीटर दूर फुलेरा के निकट स्थित बंदे बालाजी धाम मंदिर पूरे देश में प्रसिद्ध है, इस मंदिर में राजस्थान के कोने-कोने से ही लोग नहीं नहीं बल्कि देश के कोने-कोने से लोग बालाजी का दर्शन करने के लिए साल भर आते रहते हैं यहां पर हर साल मेला भी भरता है, इस मंदिर ट्रस्ट के पिछले 20 साल से ओम पूनिया अध्यक्ष हैं और इस मंदिर के नवीनीकरण और विस्तार के लिए भी पूनिया ने यहां व्यापक पैमाने पर ट्रस्ट के माध्यम से काम करवाया है जिसकी वजह से यह मंदिर अब करोड़ों लोगों की आस्था का प्रतीक बन चुका है इस ट्रस्ट के माध्यम से कई जगहों पर गौशालाओं और धर्मशालाओं का निर्माण भी करवाया गया है इसके अलावा ट्रस्ट के माध्यम से गरीब और निर्धन परिवारों की समय-समय पर ज़रूरतें पूरी की जाती है, गरीबों निर्धन बच्चों की पढ़ाई और छात्राओं के कल्याण के लिए भी ट्रस्ट के माध्यम से नियमित रूप से भलाई के काम किए जाते रहे हैं, इस ट्रस्ट के माध्यम से शिक्षा, चिकित्सा के क्षेत्र में भी लोगों की भलाई के लिए काम किया जाता है यह मंदिर ट्रस्ट पूरी तरह से सामाजिक सरोकारों के कामों के लिए समर्पित है। ट्रस्ट के माध्यम से बड़े पैमाने पर किए जा रहे सामाजिक सरोकारों के कामों की वजह से ही पूनिया को लोग एक साधु संत की तरह मानते हैं और उनके अच्छे व्यवहार और आचरण की लोग अक्सर चर्चा करते रहते हैं।

जयपुर डेयरी के अधिकारियों और कर्मचारियों में भी लोकप्रिय हैं ओमप्रकाश पूनियां

ओम पूनिया किसानों और पशुपालकों में ही नहीं बल्कि जयपुर डेयरी के प्रशासन से जुड़े लोगों में भी काफी लोकप्रिय हैं जयपुर डेरी का चाहे कोई अधिकारी हो या फिर कर्मचारी हर कोई ओम पनिया के व्यवहार और उनके कार्य शैली से काफी प्रभावित हैं यही वजह है कि पिछले 20 साल से ओम पूनिया अपने व्यवहार को लेकर हमेशा जयपुर डेयरी के परिसर में कर्मचारी और अधिकारियों में चर्चा का विषय बने रहते हैं, जानकार लोगों का कहना है कि जयपुर डेयरी के कर्मचारी के हितों की रक्षा करने और उनके रिटायरमेंट होने के बाद जयपुर डेयरी की ओर से दी जाने वाली सुविधाओं के विस्तार को लेकर भी हमेशा पूनिया प्रयासरत रहते हैं, चाहे बीमा पॉलिसी हो या फिर बीमारी में दवाई इत्यादि उपलब्ध कराने का मामला हो, हर मामले में पूनिया की कोशिश यह रहती है कि जयपुर डेयरी के कर्मचारियों को ज्यादा से ज्यादा सुविधा मिले ताकि जयपुर डेयरी के कर्मचारियों के परिवारों में भी हमेशा खुशी बनी रहे, इसके लिए पूनिया ने बाकायदा आरसीडीएफ प्रशासन और राजस्थान सरकार से जुड़े लोगों से संपर्क करके कर्मचारियों के हितों की रक्षा के लिए बुलंद आवाज भी उठाते रहे हैं जिसकी वजह से पूनिया जयपुर डेयरी के कर्मचारियों में भी काफी लोकप्रिय है।

जयपुर डेयरी का पूरे देश में है नाम

पिछले करीब 20 साल में जयपुर डेयरी ने दूध के उत्पादन, वितरण, मार्केटिंग इत्यादि क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है, वर्ष 2005 की तुलना में आज दूध का उत्पादन वितरण और मार्केटिंग कई गुना बढ़ गई है, दूध की गुणवत्ता को लेकर भी अब ग्राहकों में किसी भी तरह की कोई शिकायत नहीं है दूध की गुणवत्ता को लेकर जयपुर डेयरी प्रशासन काफी सजग रहता है, पुनिया हमेशा इस बात के पक्षधर रहे हैं कि ग्राहकों को बिल्कुल शुद्ध सरस के प्रोडक्ट मिले। वह दूध, छाछ, दही, आइसक्रीम, लस्सी इत्यादि सभी बिल्कुल शुद्ध मिले इसलिए जयपुर डेयरी में अशुद्ध और मिलावट के सामान की दुर्गंध दूर-दूर तक नजर नहीं आती, जयपुर डेरी में अत्यधिक प्लांट स्थापित किए गए हैं जो दूध और दूध से उत्पाद किए गए सामान को बिल्कुल तरोताजा रखते हैं, इन सब प्रयासों में ओम पूनिया की बड़ी भूमिका रही है क्योंकि पूनिया नियमित रूप से जयपुर डेयरी का दौरा करके विभाग बार काम की प्रगति की समीक्षा करते रहते हैं तथा अधिकारियों से नियमित रूप से संपर्क में रहकर उन्हें जयपुर डेयरी को सबसे बेस्ट डेरी बनाने के लिए प्रेरित करते रहते हैं उसी का नतीजा है कि जयपुर डेयरी सरस की अन्य डेयरी से काफी आगे निकल गई हैं इतना ही नहीं पूरे देश में जयपुर डेयरी ने अपनी एक अलग पहचान बनाई हुई है जिसका श्रेय पूनिया को दिया जा सकता है।

सरस

अलवर का प्रसिद्ध
कलाकंद

" स्वाद का ऐसा
जादू करता
एक गिलास से
मन नही भरता "

अलवर का प्रसिद्ध
कलाकन्द

जीवन में भरे रस...
हमारा प्यारा सरस

सचिव कल्याण कोष योजना

योजनान्तगत समितियों के साथियों के हितार्थ साथी की सामन्य मृत्यु पर एक लाख रूपये दुर्घटना मृत्यु पर 2 लाख रूपये तथा असाध्य बीमारियों से ग्रसित होने पर 1 लाख रूपये तक की राशि का उपचार पुनःभरण किया जाता है।
जिसकी परिकल्पना राशि लाभार्थी को दी जाती है।

सरस सुरक्षा कवच बीमा योजना (RSSKBY)

योजनान्तर्गत दुग्ध समितियों के सदस्यों का निःशुल्क बीमा किया जाता है। बीमित को दुर्घटना मृत्यु होने पर 5 लाख रूपये एवं अंग भंग को जाने के स्थिति में 2.50 से 5.0 रूपये तक का बीमा लाभ देय है।

मुख्यमंत्री दुग्ध उत्पादक सम्बल योजना

माननीय मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार द्वारा प्रेषित मुख्यमंत्री दुग्ध उत्पादक सम्बल योजना के अन्तर्गत संघ द्वारा देव दुग्ध कर दर के अतिरिक्त 5 रूपये अनुदान दिया जा रहा है

सरकार द्वारा संचालित लाभकारी योजनाएं
1 म्हारों बैंक म्हारो खातों योजना
2 माइक्रो एटीएम मशीन वितरण योजना

TREHAN GROUP

RERA No.: RAJ/P/2019/1031
www.rera.rajasthan.gov.in

URBAN SQUARE
GALLERIA MALL
ALWAR

दुकाने • ऑफिसेस • स्टोर्स

READY TO MOVE
READY TO MOVE

आजादी की उड़ान!

इस स्वतंत्रता दिवस
अपने निवेश को दें

शुरुआत
मात्र ₹17* लाख से

अशोई रेंटल
₹2.72* लाख से

16% ASSURED RETURN

IPHONE WITH EVERY BOOKING

6% LEASE GUARANTEE
*नियम व शर्तें लागू

आज ही संपर्क करें
8209400500

धराली त्रासदी: प्रकृति से छेड़छाड़ का दर्दनाक सबक

उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले के धराली गांव में हाल ही में आई भीषण बाढ़ ने एक बार फिर यह सख्त संदेश दिया है कि अगर हम प्रकृति के साथ संतुलन खो देंगे, तो परिणाम विनाशकारी ही होंगे। मूसलाधार बारिश, बादल फटना और हिमनदों के पिघलने से अचानक उफनती नदी ने पूरे गांव को अपनी चपेट में ले लिया। देखते ही देखते घर बह गए, पुल टूट गए और लोगों की जिंदगी का ताना-बाना बिखर गया। यह घटना केवल एक स्थानीय त्रासदी नहीं है, बल्कि हिमालयी क्षेत्र के नाजुक पर्यावरणीय संतुलन के बिगड़ने का साफ संकेत है–और इसके पीछे एक बड़ा कारण है मानव का प्रकृति के साथ लगातार बढ़ता हस्तक्षेप।

हिमालय, जिसे 'पानी का टॉवर' भी कहा जाता है, एशिया की प्रमुख नदियों का उद्गम स्थल है। यहां के ग्लेशियर करोड़ों लोगों के लिए जल का स्रोत हैं। लेकिन बढ़ते तापमान के कारण ये ग्लेशियर तेज़ी से पिघल रहे हैं। पिघलते ग्लेशियरों से अस्थायी झीलें बनती हैं, जो कभी भी फटकर विनाश ला सकती हैं। धराली जैसी आपदाएं इसी खतरे की कड़ी याद दिलाती हैं। जलवायु परिवर्तन ने मानसून के स्वरूप को भी बदल दिया है–बारिश अब अधिक तीव्र और अप्रत्याशित होती जा रही है। वातावरण में बढ़ी नमी और असामान्य तापमान बदलाव, बादल फटने और भारी वर्षा की घटनाओं को और बढ़ा रहे हैं।

मानव हस्तक्षेप और पर्यावरणीय क्षरण

धराली जैसी त्रासदियों के पीछे केवल प्राकृतिक कारण ही नहीं, बल्कि मानवजनित कारक भी प्रमुख भूमिका निभाते हैं। पहाड़ों में जंगलों की अंधाधुंध कटाई ने मिट्टी की पकड़ को कमजोर कर दिया है। पेड़-पौधे मिट्टी को बांधते हैं और पानी को सोखकर बाढ़ के खतरे को कम करते हैं, लेकिन जब जंगल खत्म होते हैं, तो थोड़ी सी बारिश भी भूस्खलन और बाढ़ का कारण बन जाती है।

अनियोजित निर्माण कार्य– चाहे वह सड़कों का चौड़ीकरण हो, होटल और रिसॉर्ट्स का निर्माण हो या नदियों के किनारे भवन खड़े करना–प्रकृति की संतुलन क्षमता को कमजोर कर देता है। नदियों के प्राकृतिक प्रवाह को रोककर, उनके किनारों पर निर्माण करना, पानी के बहाव को अवरुद्ध करता है और अचानक आपदा के समय पानी को कोई रास्ता नहीं मिलता। खनन गतिविधियां, सड़क निर्माण में पहाड़ों की अंधाधुंध कटाई, और मिट्टी का क्षरण, सभी मिलकर भूमि को अस्थिर बना देते हैं। हिमालय जैसे संवेदनशील पारिस्थितिक तंत्र में यह हस्तक्षेप कहीं अधिक खतरनाक साबित होता है।

प्रकृति की चेतावनी को समझें

धराली की घटना महज एक बाढ़ नहीं, बल्कि प्रकृति का एक चेतावनी संदेश है–कि अब भी समय है संभलने का। अगर हमने जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय क्षरण को गंभीरता से नहीं लिया, तो आने वाले वर्षों में ऐसी घटनाएं और भी आम हो जाएंगी। हमें यह समझना होगा कि मानव और प्रकृति का रिश्ता साझेदारी का है, मालिक और नौकर का नहीं।

भविष्य के लिए बचाव के कदम

1. **जंगलों का संरक्षण और पुनर्वनीकरण :** वनों की कटाई पर सख्त रोक लगाई जाए और बड़े पैमाने पर पुनर्वनीकरण अभियान चलाए जाएं।
2. **आर्द्रभूमियों का संरक्षण :** अतिरिक्त पानी को सोखने वाली इन प्राकृतिक संरचनाओं को बचाया जाए।
3. **अनियोजित निर्माण पर रोक :** संवेदनशील और नदी किनारे क्षेत्रों में निर्माण पर पूर्ण प्रतिबंध हो।
4. **पूर्व चेतावनी प्रणाली :** रडार, उपग्रह और स्थानीय अलर्ट सिस्टम को मजबूत किया जाए।
5. **समुदाय आधारित आपदा प्रबंधन :** स्थानीय लोगों को आपदा से निपटने की ट्रेनिंग और सुविधाएं दी जाएं।
6. **वैज्ञानिक निगरानी :** ग्लेशियर, वर्षा और भूमि स्थिरता पर सतत शोध हो।
7. **वैश्विक जलवायु प्रयास :** उत्सर्जन में कमी के लिए वैश्विक सहयोग हो

धराली की त्रासदी दर्दनाक है, लेकिन यह बदलाव का अवसर भी है। विकास की दौड़ में अगर हम प्रकृति की अनदेखी करेंगे, तो प्रगति के सारे सपने मलबे में बदल सकते हैं। सतत विकास का रास्ता अपनाना ही समाधान है। जब हम प्रकृति की रक्षा करते हैं, तो वास्तव में हम अपनी ही सुरक्षा करते हैं।

राजस्थान सरकार एवं केंद्र सरकार द्वारा विज्ञापन के लिए मान्यता प्राप्त

जयपुर टाइम्स

(जयपुर एवं चूरू से एक साथ प्रकाशित)

जयपुर टाइम्स समाचार पत्र प्रतिदिन पढ़ने के लिए क्लिक करें

www.jaipurtimes.org

https://www.youtube.com/@JaipurTimes

@JaipurTimes2

@jaipurtimes.news

जयपुर टाइम्स में संवाददाता बनने के लिए, विज्ञापन एवं समाचार प्रकाशित करवाने के लिए सम्पर्क करें :-

Email- jaipurtimes2007@gmail.com (समाचारों के लिए)

Email- jaipurtimes.adv@gmail.com (विज्ञापनों के लिए)

मो. 7014217770

प्रधान कार्यालय- सी 588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड़, रोड़ नं. 14, सीकर रोड़, जयपुर (राजस्थान)